Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

03rd January 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

भारत में रहने वाले सभी वर्गों के १३० करोड़ लोगों को हिन्दू मानते हुए

आर.एस.एस. प्रमुख श्री मोहन भागवत जी द्वारा

हैदराबाद में दिए गए वक्तव्य का आर्य समाज स्वागत करता है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री

प्रो. विट्ठल राव आर्य ने

श्री भागवत जी के वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए कहा कि

RSS प्रमुख श्री मोहन भागवत जी का यह वक्तव्य कि भारत में रहने वाले सभी १३० करोड़ लोगों को वे हिन्दू मानते हैं RSS इसमें पूरा विश्वास रखता है चाहे लोगों की उपासना पद्धति अलग-अलग हो और अलग-अलग मतावलम्बी हों का हम स्वागत करते हैं । इससे NRC की जरुरत ही नही रहेगी । इसी कड़ी में हम एक बात और जोड़ना चाहते हैं वह यह कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य व आर्यावर्त की बात की है। आर्यावर्त तो ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान नेपाल, भूटान, बंगलादेश, बर्मा, मलेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका आदि से समाहित भूखण्ड है अतः इस भूखण्ड में रहनेवाले सभी को आर्य मानकर आर्यावर्त को या आर्यावर्त संघ को बनाने की जरूरत है या फिर भारत संघ ही बने । न कि CAA आदि से और सिकुड़ते जाएं ।

हिंदू या भारतीय, क्या कहें?

-Dr.Ved Pratap Vaidik

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत के हिंदू-संबंधी बयान पर भाजपा की कुछ सहयोगी पार्टियों ने असहमति व्यक्त की है और विरोध ी दल पूछ रहे हैं कि यदि संघ सभी भारतीयों को हिंदू मानता है तो उसने नए नागरिकता कानून में मुसलमानों को शरण नहीं देने का समर्थन क्यों किया है ? विरो धियों का यह सवाल बिल्कुल जायज है। कल मैंने अपने लेख में कहा था कि हिंदू शब्द के मूल अर्थ पर हम जाएं तो प्रत्येक बांग्लादेशी, पाकिस्तानी और यहां तक कि अफगान भी हिंदू ही कहलाएगा। इसलिए वहां से आनेवाले मुसलमानों को शरण नहीं देना मोहन भागवत के कथन को उलट देना है।

दूसरे शब्दों में भाय-भाय (मोदी और शाह) मिलकर क्या भागवत की काट कर रहे हैं ? याने संघ और भाजपा एक-दूसरे का विरोध कर रहे हैं या उसे यों कहा जा सकता है कि भागवत द्वारा हिंदुत्व की जो नई व्याख्या दी गई है, उसे भाई लोग समझ नहीं पा रहे हैं और वे पुरानी सावरकरवादी व्यवस्था से चिपके हुए हैं। यदि 'हिंदू' शब्द की भागवत परिभाषा आप मान लें तो पड़ौसी देशों के शरणार्थियों को शरण देते वक्त उनकी उपसाना-पद्धति का अड़ंगा लगाना निरर्थक होगा। यह ठीक है कि भारत के मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी (और आर्यसमाजी भी) अपने आप को हिंदू नहीं कहते हैं और न ही हिंदू कहलवाना वे पसंद करेंगे लेकिन यदि हम उनको 'भारतीय' कहें तो किसी को कोई एतराज नहीं होगा।

जो भारतीय हिंदू और मुसलमान विदेशों में पैदा और बड़े हुए वे भारत के नागरिक तो नहीं हैं लेकिन उनके जीवन में भी भारतीयता का संस्कार दनदनाता रहता है। यों भी हिंदू शब्द नया है। यह मुश्किल से हजार-बारह सौ साल पुराना है और विदेशी मुसलमानों का दिया हुआ है लेकिन यह एक बड़े वर्ग के लिए पक्का हो गया है। वे इसे छोड़ेंगे नहीं।

क्यों छोड़ें ? इनकी अपनी कोई सुनिश्चित उपासना-पद्धति भी नहीं है। लेकिन ये सब लोग और वे सब लोग जिनकी सुनिश्चित उपासना-पद्धतियां हैं, यदि वे भी अपने आप को 'भारतीय' कहें (जो कि वे कहते ही हैं) तो देश में सांप्रदायिक सदभावना बना रह सकता है और राष्ट्रीय एकता भी मजबूत हो सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना की अंतरंग बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकाल की अवधि को फरवरी २०२० से अगले ६ महिने के लिए सर्व सम्मति से बढाया गया। सभा के चुनाव ५ अगस्त २०२० से पूर्व कभी भी विधिवत ढंग से सभा के नियमोपनियमानुसार सम्पन्न करवाए जाएंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित ऑडिटेड हिसाब-किताब तीन वर्षों का सर्वसम्मति से पारित किया गया। आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) की आर्य समाजों से निवेदन किया गया कि वे अपनी - अपनी आर्य समाजों के चुनाव आर्य समाज के नियमोपनियमानुसार नव वर्ष युगादि २५ मार्च २०२० तक सम्पन्न करें।

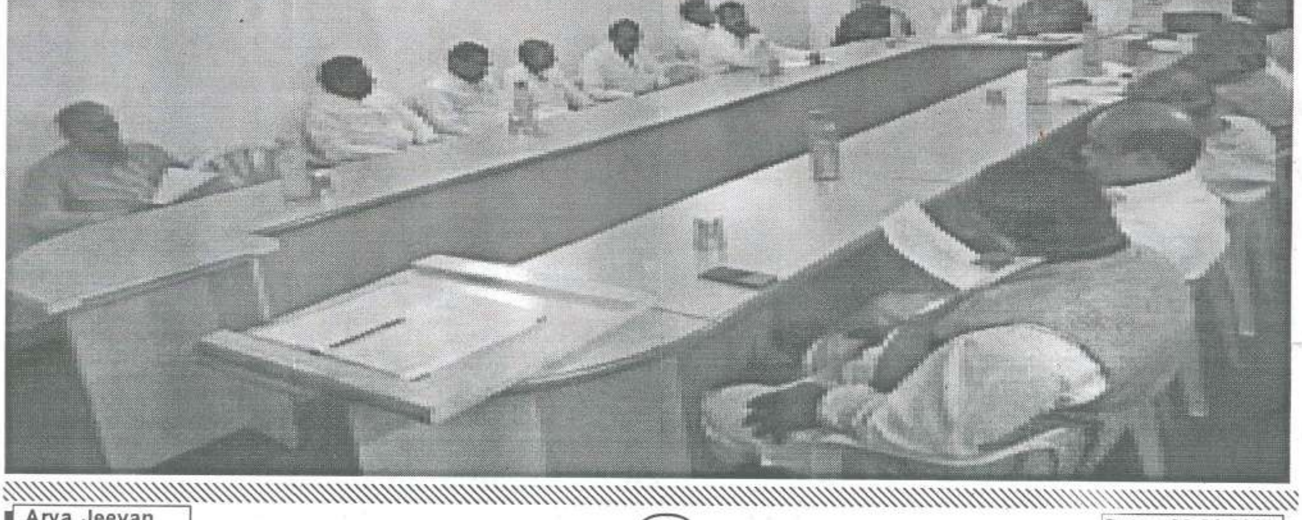

तो सत्य एक, झूठ अनेक!

अब राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) का ऐलान। प्रधानमंत्री द्वारा एनआरसी की बात को झूठा करार देने के ४८ घंटों के भीतर एनआरसी को बनवाने वाले आंकड़ा आधार (उवजीमत कंजंइंम) याकि एनपीआर को कैबिनेट ने मंजूरी दे डाली। यों जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने कहा कि एनपीआर और एनआरसी में कनेक्शन नहीं है। एनपीआर के आंकड़े एनआरसी में इस्तेमाल नहीं होंगे। पर इस बात कि पड़ताल करते हुए कोलकाता के द टेलीग्राफ अखबार ने संसद के भीतर मंत्री के जवाब और केंद्रीय गृहमंत्रालय की वर्ष २०१८-१६ की रिपोर्ट का जो अंश छापा है तो जैसे प्रधान मंत्री का कहा झूठ माना गया वैसे ही प्रकाश जावडेकर के झूठ परइस अखबार में शीर्षक है कि 'मंगलवार को हमने क्या सुना और उससे पहले क्या कहा गया था!'

मगर मोदी सरकार के मामले में अब सत्य और झूठ की बहस में नहीं पड़ना चाहिए। तभी हैरानी वाली बात है कि जब दुनिया को नागरिकता संशोधन कानून से मोदी सरकार ने बता दिया है कि मुस्लिम घुसपैठियों, शरणार्थियों, अवैध मुसल मानों का भारत में स्वागत नहीं है, भारत इनकी धर्मशाला नहीं होगा तो फालतू का लाग-लपेट, नाक को इधर-उधर से पकड़ने की एप्रोच व बातें क्यों? मोदी-शाह ने दस तरह से मंशा बताई हुई है और अब संसद से भी कानून बना कर अधिकृत तौर पर 'मुस्लिम' शब्द पर मंशा को दुनिया के आगे अधिसूचना से प्रकट कर दिया है तो इधर-उधर की बात क्यों? क्यों कांग्रेस, शहरी नक्सलवादियों को गुमराह करने वाला बताना!

हां, दिसंबर २०१६ में मोदी सरकार ने, गृह मंत्री अमित शाह ने खम ठोक उस कानून की अधिसूचना जारी की है, जिससे दुनिया ने जाना किं राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर में शरणार्थी, अवैध लोगों में से नागरिक मानने या न मानने में व्यक्ति विशेष के 'मुस्लिम' होने का भेद एक कसौटी होगा। कानून से बेबाकी व दो टूक स्पष्टता इस कानून को कोई कैसे भी ले, संविधान की मूल भावना के खिलाफ या साहस की मिसाल या नए भारत को धर्मशाला नहीं बने रहने देने का संकल्प में कैसे भी सोचें मगर है तो मोदी सरकार के इस रोडमैप का यह ठोस कदम कि भारत में रह रहे गैरकानूनी,घुसपैठिए, अवैध लोग चिन्हित होंगे, एनपीआर, एनआरसी बनेगा तो डिटेंशन कैंप भी बनेंगे।

इसके खिलाफ विपक्ष का, सिविल सोसायटी का विरोध करने का, आंदोलन करने का हक है तो मुस्लिम आबादी को गुस्से-प्रदर्शन का भी हक है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप ने अपने चुनावी घोषणापत्र, राजनीतिक एजेंडे में कुछ मुस्लिम देशों के लोगों की आवाजाही को रोका तो वहां के लोकतंत्र में बवाल हुआ, दुनिया ने ट्रंप की रीति-नीति को गलत माना मगर व्हाइट हाउस के आगे प्रदर्शन कर रहे मुसलमानों या सिविल सोसायटी पर लाठियां नहीं चलवाई गईं। वैसा कुछ नहीं हुआ जैसे दिल्ली में जामिया मिलिया में पुलिस भेज लाठियां चलवाईं, दरियागंज में कहर बरपाया!

सोचें, कि सरकार का एजेंडा 'धर्मशाला' की जगहवैध नागरिकों का रजिस्टरयुक्त राष्ट्रराज्य है। उसकी प्रक्रिया में एक कानून बना, उसमें 'मुस्लिम' शब्द के विशेष जिक्र से बवाल हुआ तो एक तरफ लाठियां भांजना और दूसरी तरफ यह कहना कि हम कुछ कर ही नहीं रहे हैं और जो है वह शहरी नक्सलियों का गुमराह करना है तो इस एप्रोच से होगा क्या?सत्य पर टिकना या सत्य छुपाना?

अपना मानना है कि सत्य को सत्यता से बता कर मुसलमानों को भी समझाया जा सकता है तो शहरी नक्सलवादियों को भी समझाया जा सकता है। मोदी-शाह-भाजपा यदि कह रहे हैं कि कांग्रेस की सरकारों, मनमोहनसिंह के हाथों ही भारत को धर्मशाला की जगह एनआरसीयुक्त राष्ट्र-राज्य बनाने का फैसला हुआ था तो यह गलत नहीं है और इससे कांग्रेस, विपक्ष का इनकार भी नहीं है लेकिन नरेंद्र मोदी-अमित शाह ने नागरिकता संशोधन कानून बना कर उसमें 'मुस्लिम' शब्द से जो भेद बनाया वह उसकी अपनी अलग सोच से है। इससे मुस्लिम शंकित हुए हैं तो उनके विरोध-प्रदर्शन पर लाठियां चलाने, धमकाने या गुमराह हुआ बतलाने से शंका दूर नहीं होगी।

हिसाब से नागरिकता संशोधन कानून गहरा अर्थ लिए हुए है। कानून से व्यवस्था बनी है कि मुसलमान को छोड़ कर बाकी सब याकि हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई प्राकृतिक-सहज हक में, नेचुरलाइज्ड अंदाज में भारत में यदि बतौर शरणार्थी, घुसपैठिए भी हैं तो वे नागरिकता के हकदार हैं। मतलब हुआ कि 'धर्मशाला' में अब नागरिक मानने, कहने वाले हिंदू, जैन, सिख, बौद्ध, ईसाई की नागरिकता पर न

शक की गुंजाइश है और न उनसे नागरिकता के दस्तावेज लेने की जरूरत है।

इसलिए अपना तर्क है कि नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) से अपने आप घुसपैठिए, अवैध नागरिकों को चिन्हित करने का काम लगभग ८५ प्रतिशत आबादी में अपने आप हो गया है। मतलब मुसलमान को छोड़ कर बाकी किसी और धर्मावलंबी का रिकार्ड बनाना, दस्तावेज लेना-जांचना जरूरी नहीं रहा। पाकिस्तान या बाग्लांदेश से यदि हिंदू, जैन, सिख आया है और वह अवैध रह रहा है, दस्तावेजों से उसकी नागरिकता प्रमाणित नहीं है (जैसे असम में कोई १२ लाख हिंदुओं की नहीं है) तब भी उनका नाम नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) में बतौर नागरिक मान्य है। तभी अब मुसलमान की ही जांच-पड़ताल का मसला बचता है!

इस बात को और समझें। सोचें नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एन आरसी) और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) तीनों का बतौर राष्ट्र-राज्य सत्व-तत्व, मकसद क्या है? जवाब है भारत के नागरिकों का सच्चा-अधिकृत रिकार्ड बने। यह काम तब होता है जब घुसपैठियों, विदेशियों, शरणार्थियों को चिन्हित करके उन्हें अलग रखें। तो विदेशी, घुस पैठिए,शरणार्थी, कौन?

विदेशी वह जो दूसरे देश के नागरिक होने का दस्तावेज दिखा कर मतलब पासपोर्ट आदि से भारत में रह रहा है। ऐसे ही शरणार्थी भी (जैसे रोहिंग्या, अफगान, तिब्बती आदि) एंट्री करा कर भारत में शरण लिए हुए हैं। अब बचे घुसपैठिए? तो जाहिर है पड़ोसी देशों से गैरकानूनी तौर पर सीमा में घुसे लोग। इसमें हिंदू भी हैं तो मुसलमान भी हैं! इसी के झमेले में असम में एनआरसी बना और सालों की भारी कवायद के बाद कोई १९ लाख हिंदू, मुस्लिम घुस पैठिए चिन्हित हुए। अब हिंदुओं को पाकिस्तान, बांग्लादेश धकेला नहीं जा सकता सो, मोदी-शाह ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) बना बतलाया कि मुस्लिम को छोड़कर बाकी सभी धर्मावलंबी स्वभाविक, प्राकृतिक तौर पर भारत की नागरिकता के हकदार हैं। मतलब ये तो भारत के नागरिक माने ही जाएंगे।

तो अब छूटे कौन? जाहिर है मुसलमान! तब यदि असम का एनआरसी महडल ही अखिल भारतीय पैमाने पर अमल में आना है तो उसकी कवायद का फोकस बिंदु क्या बनेगा? हिसाब से हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि उन तमाम लोगो को लाइन में नहीं लगाना चाहिए जो अपने को मुसलमान नहीं बताते हैं।

अपना यह तर्क नागरिकता संशो धन कानून की हकीकत में है। आखिर भारत की संसद, संविधान ने जब यह कानून बना लिया है कि मुस्लिम को छोड़ कर बाकी सभी धर्मों के शरणार्थी, घुसपैठिए, बिना दस्तावेज के रह रहे लोग भारत के नागरिक बनने के सहज, नेचुरल हकदार हैं तो भारत की ८५प्रतिशत आबादी (मुस्लिम को छोड़कर) को नागरिकता केंद्रों के आगे कागज ले कर खड़ा करवाने की क्या जरूरत है? उनके दस्तावेज, कागज सही हों या न हों, क्या फर्क पड़ता है। उनके नामों को अपने आप आधार कार्ड अनुसार रजिस्टर में दर्ज कर देना चाहिए। मगर ऐसा उस धर्म के साथ नहीं हो सकता है, जिसे कानून में 'मुसलमान' के रूप में चिन्हित करके व्यवस्था बनी है कि इस धर्म के घुसपैठियों, अवैध लोगों को नागरिक मानने न मानने का फैसला दस्तावेजों की पुष्टि के साथ सरकार करेगी!

समझे आप कि मैं क्या हकीकत बता रहा हूं? अब 'धर्मशाला' में मसला सिर्फ मुस्लिम आबादी की नागरिकता का है। बवाल के बाद पिछले पांच-आठ दिनों से सरकार विज्ञापनों से समझा रही है, मोदी ने कहा है कि संशोधित नागरिकता कानून या एनआरसी से 'हिंदुस्तान की मिट्टी के मुसलमानों' मां भारती के लालों को चिंता करने की जरूरत नहीं है! ठीक बात है लेकिन बांग्लादेशी घुसपैठियों, रोहिंग्या, अफगान-पाकिस्तानी घुसपैठियों (मुस्लिम) को तो चिन्हित करना है। और ये क्या मुसलमानों के बीच में से नहीं होंगे? तो नागरिकता केंद्र के फार्म में जानकारी के प्रमाण तो देने होंगे।

इसलिए नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के बाद एनआरसी का मतलब बहुत बदल गया है। कोलकत्ता के द टेलीग्राफ के अनुसार अमित शाह के पुराने ट्विट डिलिट हुए हैं लेकिन २२ अप्रैल २०१९ के इस टिवट को जरूर ध्यान में रखें कि दृ पहले हम नागरिकता संशोधन बिल ला कर हिंदू, बौद्ध, सिख, ईसाई, जैन शरणार्थियों, पड़ोसी देशों के धार्मिक अल्पसंख्यकों, को नागरिकता देंगे। तब एनआरसी को लागू करेंगे और घुसपैठियों को निकाल बाहर करेंगे।

सोचें जब हिंदू, बौद्ध, सिक्ख, जैन और ईसाई शरणार्थी को भारत छोड़ने के लिए नहीं कहा जाना है और एनआरसी से हिंदू, बौद्ध, सिक्ख, जैन और ईसाई शरणार्थी प्रभावित नहीं होने है तो सत्य क्या निकलता है? तो वह है मुस्लिम घुसपैठिए का सत्य! और यह सत्य ही राजनीति के दस झूठ लिए हुए है। (जारी)

-Hari Shankar Vyas

ओजोन मण्डल और पृथ्वी का पर्यावरण

-शिवनारायण उपाध्याय

सम्पूर्ण सृष्टि एवं ऊर्जा का मूल स्रोत सूर्य है। सूर्य से प्राप्त प्रकाश एवं ऊर्जा से सम्पूर्ण जीवधारियों का जीवन चलता है। इतना उपयोगी होने के साथ ही सूर्य अनेकों प्रकार की घातक किरणें पृथ्वी की ओर फेंकता है। यदि ये किरणें पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाए तो हमारे जीवन को खतरा उत्पन्न हो सकता है। प्रकृति ने इन्हें रोकने की व्यवस्था भी कर रखी है। प्रकृति ने हमारी पृथ्वी के चारों और २५ किमी. से ४० किमी. की ऊँचाई तक ओजोन गैस का एक रक्षा कवच छाते की तरह तान रखा है। यह सूर्य की हानिकारक किरणों को पृथ्वी की सतह तक जाने से रोक देता है। हानिकारक किरणें ओजोन परत से टकराकर परावर्तित हो जाती है। इन खतरनाक सूर्य की परावैंगनी किरणों से जीवधारियों और मनुष्य के रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति का ह्रास होता है। आंखों में मोतियाबिन्द उतर आता है। चमड़ीके कैंसर की आशंका कई गुना बढ़ जाती है।

ओजोन एक गैस है। इसका पता सर्वप्रथम एक जर्मन वैज्ञानिक क्रिश्चियन स्कान वेन ने किया था। यह ऑक्सीजन से मिलती-जुलती है। वायुमण्डल में ओजोन गैस ऐसे तैयार होती है जैसे किसी फेक्ट्री में उत्पन्न हो रही है।

ओजोन परत की खोज सर्वप्रथम सन् १९१३ में दो फासीसी वैज्ञानिकों चार्ल्स फार्वी और हेनर व्यूसन ने की थी। ओजोन गैस वायुमण्डल में बहुत कम है। अर्थात् १० लाख के एक हिस्से से भीकम ओजोन (O_3) में ऑक्सीजन (O_2) से एक परमाणु अधिक होता है। ओजोन गैस का रंग हल्का नीला तथा गंध तीखी होती है। ओजोन मण्डल में ऑक्सीजन पर सूर्य की परावैंगनी किरणों की क्रिया से यह उत्पन्न होती रहती है।

पिछले कुछ वर्षों से वायुमण्डल में ओजोन गैस की कमी अधिक अनुभव की गई है। ओजोन की अधिक कमी वाले क्षेत्र को 'ओजोन छिद्र' की संज्ञा दी गई है। यदि ओजोन गैस की और कमी होती है तो सूर्य का खतरनाक विकिरण पर्याप्त मात्रा में पृथ्वी एक पहुंच जायेगा और हमारे जीवन के लिए खतरा पैदा करना आरम्भ कर देगा। ओजोन के घटते स्तर की खोज सन् १९८५ में तीन वैज्ञानिकों फारमैन, गार्डनर और शाकलिन ने की थी, परन्तु ओजोन स्तर में छिद्र होने की खोज एक शेरवुड रोलैण्ड ने की थी। इस पर उनको तीन साथियों के साथ संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ब्रिटेन के अन्टार्कटिका सर्वेक्षण दल ने सन् १९८५ में एक सर्वेक्षण रिपोर्ट सन् १९८४ की जिससे ज्ञात हुआ कि सन् १९७२ के बीच औजोन में लगभग ४० प्रतिशत की कमी पाई गई। इस रिपोर्ट की पुष्टि अन्य वैज्ञानिक संस्थानों ने भी की। अमेरिका की तीन महत्त्वपूर्ण संस्थाओं १) राष्ट्रीय वैज्ञानिकी एवं अन्तरिक्ष प्रशासन (नासा), २) राष्ट्रीय विज्ञान फाउण्डेशन तथा, ३) राष्ट्रीय समुद्री एवं वायुमण्डलीय प्रशासन ने ओजोन की अत्यधिक कमी पाई, जिसे ओजोन छिद्र नाम दिया, क्योंकि यहां से सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी तक पहुंच सकती है। चिन्ता का विषय तो यह है कि ओजोन परत अनुमान से कहीं अधिक तीव्र गति से छिजती जा रही है।

अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि सन् १९८१ से सन् १९९१ के बीच ओजोन छिद्र तेरह गुना अधिक बढ़ गया था। सन् १९९२ की एक स्टेट ऑफ दी वर्ल्ड रिपोर्ट के अनुसार उत्तरी गोलार्द्ध के घनी आवादी वाले क्षेत्र में ओजोन सुरक्षा कवच अनुमान के विपरीत दुगुनी गति से सिकुड़ता जा रहा है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा किये गये अनुसंधान से दो ओजोन परत के छिद्रों का पता लगाया गया है। पहला ओजोन छिद्र अन्टार्कटिका महासागर के ऊपर तथा दूसरा ओजोन छिद्र आर्कटिका महासागर के ऊपर है। ओजोन गैस में कमी सितम्बर, अक्टूबर के महीनों में अधिक पाई जाती है।

ओजोन गैस की कमी के कारण :-

१) **मानवीय कारक :-** रसायन विज्ञान के अनुसार यदि ओजोन और क्लोरीन को मिलाया जाये तो ओजोन ऑक्सीजन में बदल जाती है। रसायनों के मनमाने उपयोग से विश्व के अनेक देश पर्यावरण को खतरनाक और विषैला बना रहे हैं। एक देश की जहरीली हवा दूसरे देश तक पहुँच जाती है। ऐसे कुछ रसायन और गैसें ऊपर वायुमण्डल में पहुंच कर ओजोन की छतरी में

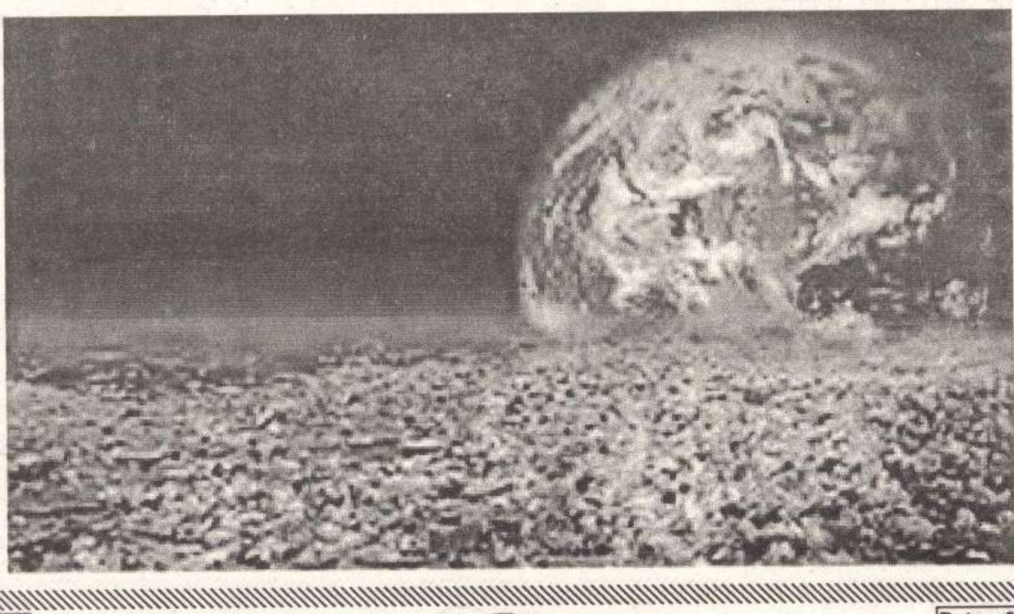

छिद्र कर रही हैं। इन गैसों में सबसे खतरनाक रसायन है क्लोरो पलोरो कार्बन। ये रसायन कार्वन, क्लोरीन तथा फ्लोरीन से मिलकर बनते हैं। ये रसायन समताप मण्डल में जाकर ५० से १०० वर्ष तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं। इन पदार्थों का आविष्कार सन् १९२८ में हुआ था। उनका उपयोग रेफ्रीजिरेटरों, एयरकंडीशनरों, रासाय निक फुहारों तथा अनेक पदार्थों के निर्माण में किया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों के उपयोग से तथा उद्योग धन्धों से गैसों के रूप में निकलने वाला क्लारो-फ्लोरो कार्वन वायु मण्डल में पहुँच रहे हैं, चूंकि इनमें क्लोरीन की मात्रा अधिक होती है, इसलिए यह वायुमण्डल में ओजोन की परत को नष्ट कर रहा है, जिससे ओजोन की मात्रा घट रही है।

२) **प्राकृतिक कारक :-** वायुमण्डल में होने वाले प्राकृतिक कारकों की वृद्धि से वायुमण्डल में ओजोन की काफी कमी हो रही है। क्लोरीन के आविष्कार के बाद प्रारम्भ में वैज्ञानिकों ने सोचा था कि क्लोरीन के द्वारा थोड़ी सी मात्रा में ओजोन का विघटन होगा, परन्तु उन्हें शीघ्र ही पता चला कि एक ओजोन अणु को तोड़ने के बाद क्लोरीन का परमाणु शान्त नहीं वैठता है, किन्तु मुक्त होने के बाद एक ओजोन पर आक्रमण करता रहता है। यह रासायनिक क्रिया तव तक चलती रहती है जव तक कि क्लोरीन का परमाणु नाईट्रोजन ऑक्साइड के किसी अणु से न टकराएं। अनुमान है कि क्लोरीन का एक परमाणु लगभग एक लाख ओजोन अणुओं को विघटित कर देता है।

३) **पराध्वनि वायुयान :-** पराध्वनि जैट वायुयानों द्वारा ओजोन मण्डल प्रदूषित होता है। इन वायुयानों में उच्च ज्वाला तापमान पर दहन प्रक्रिया के अन्तर्गत नाइट्रक ऑक्साइड निकलती है, जिसके फलस्वरूप ओजोन की मात्रा में कमी हो जाती है।

४) **उर्वरक :-** नाइट्रोजन वाले उर्वरक जो उद्योगों में तैयार किए जाते हैं ओजोन प्रदूषण के लिए अत्यधिक उत्तरदायी है।

५) **ज्वालामुखी उद्भेदन :-** ओजोन की मात्रा को कम करने वाला शक्तिशाली स्रोत ज्वालामुखी उद्भेदन है। ज्वालामुखी उद्भेदन से निकले हुए वादल ५० किमी. की ऊँचाई तक समताप मण्डल में प्रवेश करते हैं। यह उद्भेदन दो प्रकार से वायुमण्डल को प्रभावित करता है।

अ) क्षोभमण्डल में यह उद्भेदन वायु धुंध की परत बनाता है, जिसके फलस्वरूप और विकिरण की गहनता कम होने से वायु मण्डल शीतल हो जाता है।

ब) समताप मण्डल में क्लोरीन की मात्रा अधिक पहुंचने से ओजोन प्राय) समाप्त हो जाती है।

ओजोन परत की सुरक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न

ओजोन परत की सुरक्षा के लिए तथा ओजोन की कमी की गम्भीरता को देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी देश इस समस्या से चिन्तित हैं। विश्व के सभी वैज्ञानिक संगठन इस वात पर एकमत हैं कि यदि हमें ओजोन का बिाश करने वाले अन्य रसायनों का प्रयोगबन्द करना होगा। ओजोन परत की सुरक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की प्रायोगिक रूपरेखा तैयार की गई है। इस प्रायोगिक रूपरेखा को अण्टार्कटिका ओजोन प्रयोग की संज्ञा दी गई है। ओजोन की कमी को रोकने के लिए अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी प्रयास हो रहे हैं।

ओजोन सुरक्षाकी दिशा में सन् १९८७ में मांट्रियल संधि इस अर्थ में प्रमुख उपलब्धि मानी जायेगी कि पहली बार इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में जिनकी संख्या १९९० में यूरोपीय समुदाय के सदस्यों सहित ६६ हो गई थी। अपने सी.एफ.सी. के उत्पादन और खपत को क्रमिक रूप से घटाकर १९८६ ई. के स्तर से आधा करने की सहमति प्रदान की। ३ जून से १५ जून, १९९२ ई. तक रियोडीजेनेरो (ब्राजील) में संयुक्त राष्ट्र के त्तवावधान में पृथ्वी सम्मेलन हुआ। इसमें ११५ देशों के शासनाध्यक्ष तथा राष्ट्रध्यक्ष तथा १५००० गैर सरकारी संगठनों ने पृथ्वी की सुरक्षा की चिन्ता पर विचार किया था। इस सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि यहां पर विश्व पर्यावरण सुरक्षा तथा ओजोन परत पर खुलकर वहस हुई। सम्पूर्ण विश्व ने इसकी आवश्यकता को अनुभव किया। विश्व में सी.एफ.सी. रसायनों के नियंत्रण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहमति और समझौते किए जा रहे हैं। आशा है कि ये सफल होंगे।

धैर्य और संयम सफलता की सीढ़ी

जब मन इन्द्रयों के वशीभूत होता है, तब संयम की लक्ष्मण रेखा लांघे जाना का खतरा बन जाता है, भावनाएं बेकाबू हो जाती हैं, असंयम से मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, इंसान असंवेदनशील हो जाता है, मर्यादाएं भंग हो जाती हैं। इन सबके लिए मनुष्य की भोगी वृत्ति जिम्मेदार है।

भौतिक सुख-सुविधाएं, महत्वाकाक्षाए, तेजी से सब कुछ पाने की चाहत मन को असंयमित कर देती है जिसके कारण मन में तनाव, अवसाद, संवेदनहीनता, दानवी प्रवृत्ति उपजती है फलस्वरूप हिंसा, भ्रष्टाचार, अत्याचार, उत्पीड़न, घूसखोरी, नसे की लत जैसे परिणाम सामने आते हैं। काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या असंयम के जनक हैं व संयम के परम शत्रु हैं। इसी तरह नकारात्मक प्रतिस्पर्धा आग में घी का काम करती है। असल में सारे गुणों की डोर संयम से बंधी होती है। चंद लम्हों के लिए असंयमित मन कभी भी ऐसे दुष्कर्म को अंजाम देता है कि पूर्व में किए सारे सद्कर्म उसकी बलि चढ़ जाते हैं। असंयम अनैतिकता का पाठ पढ़ाता है। अपराध की ओर बढ़ते कदम असंयम का नतीजा हैं। इन्द्रियों को वश में रखना, भावनाओं पर काबू पाना संयम को परिभाषित करता है। इंसान को इंसान बनाए रखने में यह मुख्य भूमिका अदा करता है।

विवेक, सहनशीलता, सद्विचार, संवेदन शीलता, अनुशासन, संतोष संयम के आधार स्तंभ हैं। धैर्य और संयम सफलता की पहली सीढ़ी हैं। अच्छे संस्कार, शिक्षा, सत्संग आदि से विवेक को बल मिलता है। मेहनत, सेवाभाव, सादगी से सहनशीलता वढ़ती है। चिंतन, मंथन आदि से विचारों का शुद्धिकरण होता है। प्रभु की प्रार्थना, भक्ति से मनुष्य संवेदनशील होजाता है। दृढ़ निश्चय से जिंदगी अनुशासित होती है।

अध्यात्म वह यज्ञ है जिसमें सारे दुर्गणों की आहुति दी जा सकती है एवं गुणों को सोने-सा निखारा जा सकता है। आधुनिक दौर में लोग से योग की ओर लौटना मुश्किल है, लेकिन दोनों में संतुलन बनाए रखना नितांत आवश्यक है। आज जीवनशैली व दिनर्चा में बदलाव की दरकार है। मनुष्य में देव और दानव दोनों दसते हैं अतः हम भले ही देव न बन पाएँ, लेकिन दानव बनने से हमें वचना चाहिए। **-समाचार : स्वतंत्र वार्ता**

दर्शन के अनुसार सिद्धियों का यथार्थ स्वरूप

-आचार्य विश्वामित्रार्य मुमुक्षुः

आज संसार में अनेक मत, पंथ, सम्प्रदायों के सन्त महात्मा योगी तथा धर्मावलम्बियों की मान्यता है कि ईश्वर चमत्कार करता है तथा ईश्वर को मानने वाले भक्त भी अनेक प्रकार की सिद्धियों का प्राप्त करने चमत्कार करते हैं। परन्तु बिना कर्म के केवल सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होतीं। लोग मानते हैं कि असंभव को संभव करना, मृत जीव को पुनःजीवित करना आदि सभी बातें सिद्धान्त के विपरीत और असत्य हैं।

प्रश्न- सिद्धि किसे कहते हैं ?

उत्तर- योग दर्शन के अनुसार सिद्धियाँ पाँच प्रकार की होती हैं।

जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः। कैवल्यपाद ४/१

जन्म सिद्धि, औषधि सिद्धि, मंत्र सिद्धि, तप सिद्धि और समाधि सिद्धि।

क. जन्म सिद्धि- वर्तमान जन्म में जो जाति, आयु और भोग तथा शरीर, इन्द्रिय ौर मन की प्राप्ति होती है, वह पूर्वजन्म में किएगएकर्म के आधार पर ही होती है। वे ही वर्तमान जन्म के कारण बनते हैं ौर यदि किसी ने पूर्वजन्म में योग के अंगों का अनुष्ठान ठीक ढंग से किया हो तो उसके संस्कार चित्त में बन जाते हैं उन संस्कारों के आधार पर इस जन्म में शीघ्र ही योगाभ्यास से उन्नति हो जाती है।

वैसे ही पूर्वजन्म में किसी ने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके अच्छी विद्या प्राप्त की हो तो विद्या के संस्कार चित्त में बन जाते हैं। और उन संस्कारों के कारण इस जन्म में शीघ्र ही वह मनुष्य पढ़ लिखकर विद्वान् बन जाता है। चूँकि ये सब सिद्धियाँ पूर्वजन्म के आधार पर प्राप्त हुई इसलिए इनको जन्मसिद्धि कहते हैं।

ख. औषधि सिद्धि- अनेक प्रकार के अन्न तथा जड़ी बूटियों को औषधि शब्द से ग्रहण करना चाहिए। अन्नों के द्वारा शरीर और इन्द्रियों में परिवर्तन तथा शरीरादि का विसिकत होना प्रसिद्ध ही है। अन्न के बिना तो शरीर की सत्ता असंभव है और शरीर नहीं तो मन और आत्मा भी उन्नत नहीं हो पायेगी। जड़ी बूटियों के द्वारा शरीरस्थ रोग दूर हो जाते हैं और शरीर पूर्णरूपेण स्वस्थ हो जाता है जिसे कायाकल्प भी कहते हैं। शरीर और इन्द्रयों के स्वस्थ होते ही मन और आत्मा भी बहुत कुछ प्रभावित होते हैं। इसी को औषधि सिद्धि कहते हैं।

ग. मन्त्र सिद्ध- गायत्री मंत्र आदि वेद मंत्रों के पाठ तथा उनके अर्थ चिन्तन से मन, वाणी और आत्मा में पवित्रता आती है। जिस प्रकार से किसी गलत वाक्य या अपशब्द को बोलने से मन, वाणी अपवित्र तथा मन बिल्कुल अशान्त होजाता है तथा मनुष्य पतन की ओर चला जाता है वैसे ही अच्छे शब्दों, वाक्यों तथा मंत्रों का उच्चारण करने से बोलने तथा सुनने वाले इन दोनों की आत्मा, मन व वाणी पवित्र तथा मन बिल्कुल शान्त हो जाता है और आनन्द की अनुभूति होती है। मनुष्य उन्नति की ओर जाता है। इसी को मन्त्र सिद्धि कहते हैं।

घ.तप सिद्धि- यम, नियम आदि योग के अंगों का अनुष्ठान करते हुएजो सर्दी-जुकाम, भूख-प्यास आदि को सहन किया जाता है उसी को तप कहते हैं। जो योगाभ्यासी सर्दी-जुकाम, गर्मी, भूख-प्यास, हानि-लाभ, मान-अपमान, जय-पराजय आदि को सहन नहीं करता वह अहिंसा आदि व्रतों के पालन में समर्थ हो नहीं सकता। तप के द्वारा शरीर, मन, इन्द्रियाँ तो सुदृढ़ मजबूत और समर्थ होती ही हैं साथ ही साथ विद्या प्राप्ति रूप तप अनुष्ठान करने से ज्ञान की वृद्धि होकर अज्ञान नष्ट हो जाता है जिससे आत्मा भी पवित्र हो जाती है, क्योंकि अज्ञान ही आत्मा की अपवित्रता का तथा ज्ञान पवित्रता का कारण है।

ड. समाधि सिद्धि- योग के आटों अंगों का अनुष्ठान करने से चित्तवृत्ति का निरोध होकर समाधि की प्राप्ति हो जाती है उस समाधि से योगी को अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। समाधि से प्राप्त होने वाली सिद्धियों का उल्लेख योगसास्त्र के वृतीय पाद (विभूति पाद) में कर दिया गया है जैसे कि समाधि कें द्वारा योगी ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है तथा समाधि का बार-बार अभ्यास करके चित्त में रहने वाले सभी बुरे संस्कारों को दग्धबीज कर देता है और मोक्ष प्राप्ति की योग्यता प्राप्त कर लेता है। मोक्ष को प्राप्त कर लेना ही योगी के लिए सबसे बड़ी सिद्धि है।

प्रश्न- क्या कुछ ऐसी भी बातें है जो असंभव होते हुए भी योगी के साथ जोड़ दी जाती है ?

उत्तर- हाँ ! कुछ ऐसी बातें हैं जो कि असंभव होते हुए भी योगी के साथ जोड़ दी जाती हैं। योगी भूतों तथा उनसे उत्पन्न शरीर तथा भोजन, वस्त्र, आवास आदि में कवी भी आसक्त नहीं होता है। अर्थात् वह भूतों तथा इन्द्रियों पर पूर्ण विजय प्रांप्त कर लेता है। उसी प्रकार योगदर्शन के द्वितीय पाद 'साधनपाद' में भी यम नियमों के पालन से उत्पन्न होने वाली सिद्धियों का उल्लेख है। जैसे कि- **'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः ।।'** अर्थात् जो योगी पूर्णरूपेण अहिंसा का व्रत पालन कर लेता है उसके सम्पर्क में आकर उपदेश सुनने वाले तथा स्वयं योगी भी पूर्णरूपेण राग-द्वेष से रहित हो जाता है। **'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् ।।'** जो योगी मन, वाणी और शरीर से सर्वथा सत्य मानता, जानता, कहता तथा आचरण करता है वह जिस किसी संभव कार्य को करता है उसमें शीघ्र ही सफलता मिल जाती है।

'अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ।।' -योग. साधनपाद सूत्र ३७ अर्थात् मन वाणी और शरीर तीनों प्रकार से चोरी का त्याग कर देने पर योगी को सभी आवश्यक उत्तम पदार्थों की प्राप्ति होजा ती है।

'ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठियां वीर्यलाभ ।।' -योग. साधनपाद सूत्र ३८ अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करने से शरीर, मन वाणी तथा इन्द्रियों का बल बढ़ जाता है।

'अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः ।।' -योग. साधनपाद सूत्र ३७ अर्थात् अपरिग्रह के पालन से मैं कौन हूँ ? यह शरीर क्या है ? आत्मा क्या ? इत्यादि बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

उपर्युक्त ये सिद्धियाँ ऐसी हैं जो कि सम्भव हैं और योगी को प्राप्त होती हैं। योगी बिना अन्न, जल, वायु आदि का सेवन किए जीवित रह जाता है, यो बातें गलत हैं। उसी प्रकार से योगी का अग्नि के ऊपर भूमि के समान चलना, अपने शरीर को छोटा-बड़ा करना, आकाश में उड़ना, लाखों वर्षों तक जीवित रहना, जादूगरों की तरह फूल मिठाई आदि वस्तुओं को बना लेना इत्यादि जितनी भी असम्भव बातें हैं ये सब कपोल कल्पित हैं इनका योग से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः ये सब गलत हैं ये सिद्धियाँ नहीं तथा नि कार्यों को योगी नहीं करता। (इस लेख में प्रस्तुत विचार लेखक के हैं, सम्पादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)आश्रम आमसेना

आध्यात्मिक जीवन के आठ सूत्र

-हरिकृष्ण आर्य

१) **संन्ध्या उपासना :-** आध्यात्मिक जीवन से अभिप्राय है कि अपने आत्मा व परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए अपना जीवन चलाना। मैं जड़ शरीर नहीं हूँ मैं चेतन आत्मा हूँ, जिसने अपने बचपन को भीदेखा, युवावस्था को भी और वृद्धावस्था भी देख रहा है। यह जड़ युवावस्था को भी और वृद्धावस्था भी देख रहा है। यह जड़ शरीर तो एक दिन जला दिया जायेगा परन्तु मैं नहीं समाप्त होऊँगा, अपनी अगली यात्रा पर निकल जाऊँगा। ऐसा विचार कर जीवन में आत्मा को मुख्य और शरीर व मन को गौण समझकर आचरण करना और परमपिता परमात्मा को दोनों का अधिष्ठाता व नियंत्रक मानकर जीवन जीना आध्यात्मिक जीवन है। परमात्मा मेरा पिता व मैं उसका पुत्र हूँ। अमृतपुत्र। हर क्षेत्र में मेरा वह पिता मुझसे अधिक हितैषी है। अतः मैं हर समय उस परमपिता को याद रखूं और प्रातः सायं तो विशेष रूप से संन्ध्या, वन्दन, उपासना, आराधना, उसका स्मरण भजन करूं। सदा अपनी आत्मा की आवाज को सुनूं और मानूं, अपनी मनमानी न करूं। इस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन जीने से आत्मिक आनन्द व आत्मिक उन्नति प्राप्त होगी।

२) **सरलता व सादगी :-** सादगी सदाचार की जननी है और श्रृंगार व्यभिचार का दूत। जीवन में सदा सादगी और उत्तम विचारों को अपनाते हुए उच्च आदर्शों को प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा नहीं। सादा रहन-सहन से जीवन में सात्विकता, पवित्रता, धार्मिकता का उदय होता है। सादा खानपान सेतन व मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। सरलता जीवन में सदाचार व सद्व्यवहार को जन्म देती है। इसके विपरीत फैशन संसार की तड़क-भड़क, दिखावट, बनावट, झूठा अभिमान, अहंकार, असत्य व विलासिता को जीवन के अंग बना देता है। फैशन मनुष्य को व्यभिचार दुराचार भ्रष्टाचार व अत्याचार की ओर ले जाता है। झूठे ठाट-बाट, 'खाओ पीयो मौज करो' वाली असभ्यता में पलने वाले लोग जीवन में कभी उच्चादर्शों को प्राप्त नहीं कर सकते, वे तो मनुष्यके सामान्य स्तर से भी गिऱजाते हैं। आजकल की पश्चिमी बयार के चलते तो स्त्रियाँ ही क्या पुरुष भी इस फैशनरूपी दानव के पंजे में फंसते जा रहे हैं और अनैतिकता व चरित्रहीनता के गर्त में गिरते जा रहे हैं। अतः जीवन में आध्यात्मिकता, सुख शांति और आनन्द के लिए सादा रहन-सहन, सादा खानपान, सद्व्यवहार व सदाचार अति आवश्यक है।

३) **सत्याचरण :-** मन, वचन व कर्म से सत्य का पालन करना आध्यात्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। सब काम सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए तथा सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। सत्याचरण हीधर्म का

भूल है जिस पर संसार का सारा व्यापार व व्यवहार टिका हुआ है। सत्य मार्ग पर चलकर ही हम उस सत्या स्वरूप, सर्वाधार, सर्वेश्वर को जान सकते हैं, किसी असत्य, प्रपंच या धोखे या अंधविश्वास के द्वारा नहीं। आरम्भ में तो असत्य, ठगी या धोखे से भी सफलता मिलती दिखाई देती है, परन्तु यह सफलता क्षणिक और अवास्तविक होती है। असत्य पर आधारित जीवन चलाने वाले लोग एक दिन जीवन की बाजी हार जाते हैं। सत्याचरण से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध व पवित्र प्रभु का निवास स्थल है। अतः सत्य प्रकाश स्वरूप परमात्मा सत्याचरण करने वालों को ही सहायक होता है, अन्यों का नहीं। परमेश्वर पूर्णतः सत्य है।

४) **सकारात्मक दृष्टिकोण :-** सकारात्मक दृष्टिकोण से तात्पर्य है-जीवन में सदा शुभ कल्याणकारी संकल्प विकल्प, शुभ विचार व शुभ भावी भावनाएं बनाए रखना। आत्मा व परमात्मा में दृढ़ विश्वासी होना ही सकारात्मक जीवन दृष्टि है। परमात्मा ही सारे जगत् का उत्पत्तिकर्ता, कर्ता धर्ता व संहर्ता है। वह अत्यन्त मंगलरूप व कल्याणकारी है। वह जो कुछ करता है, सब शुभ ही करता है। वह हम जीवात्माओं का परम हितकारक है। अतः हम नकारात्मक व अशुभ विचारों को महत्त्वहीन, निराधार व निरर्थक समझकर सदा छोड़ दें। नकारात्मक दृष्टि वाले लोग नास्तिक, विभिन्न आशंकाओं से ग्रस्त, भयभीत, आलसी व प्रमादी होकर दुःख भोगते हैं। ऐसे लोग विद्वानों व महात्माओं में भी दोष ढूंढ़ते रहते है और उनके सद्गुणों से भी वंचित रह जाते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण वाला मनुष्य सदा आशावान बना रहता है। ईश्वर कृपा से सब शुभ होगा, अच्छा ही होगा, ऐसा विचार जीवन के हर क्षेत्र में बना रहता है और वह निर्भय निःशंक, उत्साही व पुरुषार्थी होकर हर कार्य में सफलता प्राप्त करता है। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण आद्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गुण है।

५) **समता व समानता :-** परमेश्वर के न्याय नियम अनुसार मनुष्य जीवन में सुख वा दुःख दोनों ही आते रहते हैं। कभी-कभी लगता है जीवन में दुःख अधिक है, सुख कम, परन्तु यह सत्य नहीं। आद्यात्मिक जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि हम सुख-दुःख, हर्ष-शोक, मान-अपमान, हानि-लाभ में समता का भाव रखें और द्वन्द्वों के प्रभाव से ऊपर उठें। जब जीवन में सुख आवें तो हम नाचें नहीं और जब दुःख आवें तो रोएं नहीं। यही समता का भाव है। दोनों अवस्थाओं में समान विचार रखना समतायोग कहलाता है। जितना हम अपने सुख को खींचकर लंबा कर

देंगे, हमारा दुःख बी खिंचकर उतना ही लंबा हो जायेगा । अतः अतिवाद से सदा बचो । सुख आवे तो प्रभु का धन्यवाद करो और दुःख आवे तो प्रभु को याद करो, उससे सहनशक्ति व सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करो । यही आद्यात्मिक जीवन का लक्षण है । जीवन में समता का अभ्यास एक बड़ा तप है, जिसका परिणाम सदा सुखद व अनुकरणीय है । ऐसा करने से मनुष्य बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी विचलित नहीं होता ।

६) **संतोष सुख :-** संतोष जीवन का सबसे बड़ा धन है जो मनुष्य को सुख व आनन्द की प्राप्ति कराता है । संतोषी परमसुखी होता है और असंतोषी परम निर्धन । इस जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, उस प्रभु की कृपा से मिला है । जितना भी प्रभु ने दिया है, मेरे लिए पर्याप्त है । प्रभु ने मुजे जीवन में बहुत कुछ दिया है और दिये जा रहे हैं । मैं इसको लिए उसका बार-बार धन्यवाद करता हूँ । ऐसा विचार जीवन में सदा बनाये रखें । तृष्णा का त्याग ही संतोष है । 'और और' की हाय-हाय मनुष्य को मृत्युपर्यन्त दुःखी रखती है । एक इच्छा के पूरा होने पर दूसरी इच्छा तीव्र गति से सिर उठाकर सामने आ खड़ी होती है और मनुष्य इन इच्छाओं के जाल से कभी निकल नहीं पाता और सदा दुःख सागर में ही गोते खाता-खाता इस संसार से विदा हो जाता है । जो मनुष्य अपनी इच्छाओं और अनावश्य कताओं पर अंकुश नहीं लगा पाता तथा संयम और समझदारी से काम नहीं लेता वह अन्ततः झूठ, भ्रष्टाचार, लूटपाट, चोरी डकैती पर उतारू हो जाता है । तृष्णा ही अनेकानेक बुराईयों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों व दुःखों की माँ है । आध्यात्मिक जीवन जीने वाला मनुष्य इस तृष्णा को संतोपरूपी कुलहाड़ी से काटकर नष्ट कर देता है । वह अपने लिए आगे सुख का मार्ग प्रशस्त कर लेता है ।

७) **स्वाध्याय :-** स्व का अर्थ है अपना और अध्याय का अर्थ है-अध्ययन । इस प्रकार स्वाध्याय का अर्थ हुआ-अपने आपको पढ़ना व जानना या पहचानना । कैसे जानें ? आत्मा व परमात्मा का बोध कराने वाली विद्या को पढ़ें । वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना और उसके अनुसार आचरण करना स्वाध्याय कहलाता है । संसार में सभी मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि कर सुख व आनन्द को भोगना चाहते हैं । इनकी प्राप्ति का सत्यज्ञान वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि सद्ग्रंथों के अध्ययन से ही मिलता है । इनमें परमात्मा, जीव और प्रकृति का शुद्ध ज्ञान भरा पड़ा है । अकेलेपन और दुःख की घड़ियों में एक स्वाध्याय ही मनुष्य का सच्चा साथ निभाता है । परमपिता परमात्मा ओ३म् का जप, भजन, चिन्तन, मनन व गुरुमंत्र गायत्री, महामृत्युंजय मंत्र व ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना आदि आदि मंत्रों की अर्थ विचार सहित पुनरावृत्ति भी स्वाध्याय के अन्तर्गत ही आता हैं । स्वाध्यायशील मनुष्य का सम्बन्ध अपने उपास्य, आराध्य व इष्टदेव से शीघ्र जुड़ जाता है और उसके दोष, दुर्गुण व भ्रम दूर होकर शीघ्र अपने ध्येय पर पहुँच जाता है । निरन्तर व नियमित स्वाध्याय आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है जो मनुष्य को सत्यज्ञान और ज्ञान सहित भक्ति के द्वारा ईश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर व उत्साहित करता है । वेद का आदेश व निर्देश है कि साध जन स्वाध्याय में कभी आलस्य व प्रमाद न करें औरसदा स्वाध्याय को नित्यकर्म की भांति निभाएं ।

८) **सत्संगति :-** स्वाध्याय की भांति ही सत्संगति सत्पुरुषों का संग भी आध्यात्मिक उन्नति के लिएपरम आवश्यक है । वैदिक सत्संगों उत्सवों व शिविर आदि में दूर-दूर से विद्वान् लोग आते हैं, उनके उपदेश व प्रवचन सुनने से ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान व अनुभव थोड़े समय में ही उपलब्ध होजाता है । उनका जीवन सात्विकता, धार्मिकता व आध्यात्मिकता का एक उदाहरण होता है, जो साधक के लिए आदर्श का काम करता है । सत्संगति और परस्पर विचार-विमर्श से कई आशंकाएं, भांतियाँ और गलत धारणाएं दूर हो जाती हैं । अतः वैदिक विचार वाले आर्य सज्जन विद्वान् व स्वाध्यायशील साधक यदि आपसे थोड़ा दूर भी रहते हों, तो परस्पर नियमित सत्संगति दोनों के लिए अतिलाभदायक है । ईश्वर भक्ति, स्तुति प्रार्थना आदि के भजन नियमित रूप से सुनना सुनाना भी सत्संगति हीहै । इससे साधना का निरन्तर प्रवाह साधक के जीवन में बना रहता है । परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हमें जीवन में ईश्वर उपासना, सरलता व सादगी, सत्याचरण, समता, सकारात्मक दृष्टिकोण, संतोष स्वाध्याय व सत्संगति को अपनाएं और एक आदर्श आध्यात्मिक जीवन जीने में सफल हो सकें ।

अध्यात्म अमृत

वेदवाणी

पत्तों की महिमा

यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः ।
तामा सहस्त्र पर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वं हसः ।।

पृथ्वी पर जितनी भी असंख्य पत्तों वाली औषधियां हैं, वे सव हमें प्रदूषणजनित मृत्यु से छुड़ायें ।

संतवाणी

निंदा करना पाप है, निंदा सुनना और भी बड़ा पाप है । अगर कोई व्यक्ति अपने घर का कचरा तुम्हारे घर डाल दे तो क्या तुम उससे खुश होकर उसे चाय पिलाओगे ? नहीं ना ! तो फिर जव कोई व्यक्ति तुम्हारे सामने किसी की निंदा करता है तो तुम खुश होकर उसे क्यों सुनते हो । वह तुम्हारे कान में कचरा डाल रहा है, और तुम खुश हो रहे हो । तुम्हारे जैसा बेवकूफ नहीं देखा, और हाँ, अगर फिर भी निंदा सुनने का शौक है तो एक काम करिए अपने कान के ऊपर के हिस्से में (डस्टवीन) और नीचे (प्लीज यूज मी) भी लिखना चाहिए ।

फिर I have no problem.-मुनि तरूण सागर

प्रेरख विचार

H पिता वो हे जो आपको गिरने से पहले थाम लेता है, लेकिन आपको ऊपर उठाने के बजाय आपके कपड़े झाड़ता है और आपको फिर से कोशिश करने के लिए कहता है ।

H हम जब दिन की शुरुआत करते हैं, तव लगता है कि पैसा ही जीवन है.. लेकिन जव शाम को लौटते हैं, तव लगता है, शान्ति ही जीवन हैं ।

H हंसते रहोगे तो दुनिया साथ है वरना आंसुओं को तो आँख में भी जगह नहीं मिलती ।

H एकता मिट्टी ने की तो ईट बनी, ईट ने की तो दीवार बनी, दीवार ने की तो घर बना ये बेजान चीजें हैं... ये सब एक हो सकते हैं तो हम तो इंसान हैं ।

H मैंने एक बुजुर्ग से पूछा । आज के समय में सच्ची इज्जत किसकी होती है... ? बुजुर्ग ने जवाब दिया : इज्जत किसी इंसान की नही होती, जरूरत की होती है... जरूरत खत्म हो तो इज्जत खत्म ।

यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन

-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

किसी भी मांगलिक अवसर पर हम अपनी सफलताओं और उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करें तो ये नितान्त स्वाभाविक है । सामान्य बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे । धूमधाम से सामान्यतः यह अर्थ ग्रहण किया जाता है कि हम परस्पर इकट्ठे होकर एक पार्टी दें और झूमें और गाएँ । वस्तुतः धूमधाम एक महत्तवपूर्ण शब्द है । जो दो शब्दों के मेल से बना है । धूम का अर्थ है-धुँआ, धाम का अर्त है-स्थान । इसका अर्थ यही है, जिस स्थान पर यज्ञ का धुँआ हो, जहाँ यज्ञ का आयोजन हो, उसीको ही धूमधाम कहते हैं ।

यज्ञा धीनं जगत् सर्वम् सारा संसार यज्ञ के आधीन है । जगत् को स्वस्थ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए यज्ञ का होना अनिवार्य है । आर्ष सिद्धान्त अग्नि को शोधक, विभाजक शक्ति मानता है क्योंकि अग्नि उर्ध्वमुखी, किन्तु सूर्य की गति को टेढ़ी गति मानते हैं, अग्नि में आहूत पदार्थ शीघ्र वायुमण्डल में फैल जाता है और सूर्य की किरणें तथा विद्युत शक्ति से घर्षण के कारण उसकी शक्ति असंख्य गुणा बढ़ जाती है, जिससे प्रदूषणों का निवारण और रोगनाश होने लगते हैं वैदिक साहित्य में धुँए और ज्योति को विशिष्ट माना है । **'धूमज्योतिः सलिल मरुतां सन्निपातः'** धुँए और ज्योति का सम्मिश्रण पाकर वायु और जल विशोधित होते हैं । अग्निहोत्र देवयज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित हैं । हवनकुण्ड में अग्नि के दहन से औषधत्व आसवित होकर प्रकाश संश्लेषण और ऑक्सीकरण सिद्धान्त से असंख्य गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं । हवन द्वारा उत्पादित तत्व असंख्य गुणा प्रदूषणों का निवारण करने में समर्थ हैं । जड़ी बूटी के होम से सुगन्धित स्फूर्ति तथा शान्ति प्राप्त होती है । यज्ञीय ऊर्जा का यज्ञस्थल में चहुँ ओर प्रभाव प्राणिजगत् के लिए उपयोगी है । जो वस्तु खाने में एक व्यक्ति को लाभ देती है वही वस्तु ताप में जलाने पर असंख्य लोगों के लिए प्रभावकारी होती है ।

औषधियों को आग में जलाने से उनमें विद्यमान तत्व ज्यों के त्यों हवा में फैल जाते हैं । उदाहरण के लिए दालचीनी में विद्यमान ६१ प्रतिशत सिन्नोमिक, एल्डीहाईड तथा १०-१२ प्रतिशत युजिमाल रक्त में घुलकर उसे पतलाकरं हृदय आघात से रक्षा करने में सहायक है । इसी तरह अंजीर में विद्यमान 'फिसिन' नामक तत्व आंत्रकृमि नाशक है । इलायची में विद्यमान टपिनिआल और सीनिआल तत्त्व शरीर के दर्द का नाशक है ।

भवन की सार्थकता भावना से है, गृह की सार्थकता गृहिणी (नारी) से है, होम की सार्थकता होम (हवन)से है ।

यज्ञ की मूलभावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता से दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ है । अंग्रेजी में घर को .. कहा जाता है, कौन नहीं चाहता कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई .. बन ही नहीं सकता ।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किए हुए है । इसका निवारण यज्ञ से ही संभव है । अनार आदि वृक्षों का फल जब झड़ता है तब माली गुग्गुल का धुँआ देकर ही उसे फल को उगाता है । यह हवन यज्ञ ही तो है ।

यज्ञ (हवन) से लाभ-१) पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगंधित होता है । २) प्रदूषण दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है । ३) दुःख एवं दारिद्रय का नाश होता है । ४) मानसिक शांति की प्राप्ति और आनन्द की वृद्धि बढ़ती है । ६) सात्विक कार्यों की वृद्धि होती है । ७) शांति तथा सद्भाव का प्रचार होता है । ८) देवपूजा, संगतिकरण और दान होते हैं । ९) मानवीय कर्त्तव्य का पालन होता है ।

महर्षि दयानन्द जी का कथन है-जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूर्णतः अब भी प्रचार ही तो वैसा ही हो जाए ।

यज्ञ आयु धारक है-यथा-**मयदग्नये शुचये आयुरेवास्मिन् तेन दधाति** । पवित्र अग्नि में जो आहुति दी जाती है उससे यज्ञ, यजमान को आयु धारण कराता है ।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए । शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरणकी शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है ।

किसके द्वारा रक्षा की जाती है ?

सत्य के द्वारा धर्म की रक्षा की जाती है, योग के द्वारा विद्या की रक्षा की जाती है, साफ-सफाई से सौन्दर्य की और सदाचार से परिवार की रक्षा की जाती है । तोल माप से अनाज की, फेरने से घोड़ों की, निरन्तर देखभाल से गौओं की और ढंग के पूरे वस्त्रों के धारण कराने से स्त्रियों की रक्षा की जाती है ।

शेखर-वाणी

H संसार में हर चीज बदल रही है । बहाव का नाम ही संसार है । इस बहाव में कोई चीज़ है, जो ठहरी हुई है, स्थिर है नित्य है, शाश्वत है । कण-कण में व्याप्त है, उसी चैतन्य का नाम परमात्मा है । उसी को जानो उसी को देखो उसी का होकर जीओ । जब साधक ईश्वर का हो जाता है तो प्रभु भी उसके हो जाते हैं । दुनियाँ के चौराहे पर कितनों से मेल मिलाप हुआ । कितनों से मिले मजबूरी में कितनों से अपने आप हुआ । कितनों से मिलकर खुशी हुई कितनों से मिल संताप हुआ । जिससे मिलना उसे मिल न सके, इस कारण पश्चाताप हुआ ।

H जीवन में सुख चाहते हैं तो देश नहीं अपितु द्वेष छोड़ें । द्वेष से दोष उत्पन्न होता है । संसार में प्रेम और परमात्मा से अधिक पवित्र और मंगलप्रद अन्य कुछ भी नहीं है ।

जिस मनुष्य के हृदय में दूसरों के लिये प्रेम, सहानुभूति और दर्द नहीं वह मानव कैसा ?

कबीरा सोई पीर है जो जाने पर पीर । द्वेष रहित होना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है । चलो उतारें हम जीवन में, छोटी-मोटी बातें । हाथ जोड़कर मिले सभी से, सीखें बनना नम्र अभी से वैर-द्वेष से बचना पल-पल । बिसरा दें सब घातें । कोयल जैसा मीठा बोले पीछे बोले, पहले तोलें । दूर हटा डालें जीवन से, अंधियारी सी रातें ।

H दीप जलना नहीं अगर उसमें तेल नहीं होता । मन में यदि मैल हो तो प्रभु से मल नहीं होता ॥

मोदी, एनआरसी और 'झूठ'

रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों को, मुसलमानों को गुमराह हुआ बताया। उन्होने दो टूक शब्दों में कहा कि राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर याकि एनआरसी की बात झूठी है। बावजूद इसके आज भी टीवी चौनलों पर विरोध-प्रदर्शन होते दिखे हैं। दिल्ली के मंडी हाऊस-जंतर-मंतर पर भीड़ दिखी। क्या अर्थ निकाला जाए? या तो देश ने प्रधानमंत्री के कहे को झूठा माना या लोगों को गुमराह करने से विरोधी, शहरी नक्सली बाज नहीं आ रहे हैं! सरकार मुसलमानों को समझाने के लिए विज्ञापनबाजी कर रही है लेकिन मुसलमान भरोसा नहीं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री के कहे जाने के बावजूद नहीं माना जा रहा कि एनआरसी की बात झूठ और फितूर है। सोचें, प्रधानमंत्री की जुबान बनाम आंदोलित जनता व विरोधी नेताओं के मध्य अविश्वास का कितना बड़ा अंतर, खाई याकि गेप है।

यह स्थिति देश की किस दशा को दर्शाती है? १३० करोड लोगों की आवादी में यदि आज यह तौलने बैठे कि कितने लोग प्रधान मंत्री मोदी के कहे पर विश्वास कर रहे हैं और कितने नहीं तो खौफनाक तस्वीर निकलेगी और भारत का जनमानस विभाजित व शासक- प्रजा के बीच खाई बनी हुई दिखेगी। इस बात को वोट, चुनाव, राजनीति के चश्मे में न देखें और विचार करें कि नागरिकता जैसे मसले पर भी जब परस्पर विरोधी सोच बनी है तो उससे राष्ट्र-राज्य के प्रति विश्वास-आस्था का क्या बन रहा होगा?प्रधानमंत्री कह रहे है कि सब झूठ और लोग उसे मान नहीं रहे।तभी विरोध- प्रदर्शन- आंदोलन खत्म नहीं।

हां, प्रधानमंत्री मोदी ने रामलीला मैदान में एनआरसी पर आंदोलनरत लोगों को झूठ का शिकार और झूठा करार दिया! भारत के मौजूदा नैरेटिव व बवाल को झूठा बताया! इसे शहरी नक्सलवादियों द्वारा गुमराह बनाना कहा। तथ्य है कि हर कोई उनके भाषण से पहले एनआरसी का ख्याल लिए हुए था। एक वर्ग मान रहा था कि अच्छा है तो दूसरा वर्ग मान रहा था बुरा। सबका निचोड़ था, दुनिया मान रही थी, हम सब मान रहे थे कि एनआरसी और घुसपैठियों को निकालना मोदी सरकार की प्राथमिकता है। सरकारइस पर गंभीरता से काम कर रही है। लेकिन अचानक प्रधानमंत्री ने रविवार को दो टूक शब्दों में कहा यह सब गलत।

पहला सवाल है हम क्यों ऐसा मान रहे थे? क्यों आंदोलन हो रहा था? जवाब है भाजपा ने, मोदी सरकार ने, राष्ट्रपति ने, गृह मंत्री ने इसका वादा, इसका संकल्प बताया हुआ था।मोदी सरकार की दूसरी शपथ के बाद भारत के राष्ट्रपति से लेकर गृह मंत्री अमित शाह सबने अलग-अलग मौको पर अह्वन रिकार्ड कहा है कि 'मान के चलिए एनआरसी आने वाला है!'

यह वाक्य लोकसभा में नागरिकता संशोधन बिल को पास कराते हुए ६ दिसंबर को गृह मंत्री अमित शाह ने सदन स्पीकर की और इंगित हो कर बोला था। इसकी वीडियो क्लीपिंग दुनिया ने देखी है। ऐसे ही नई सरकार के पहले संसद सत्र में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने सांसदों से कहा कि मेरी सरकार ने राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर के प्रोसेस पर प्राथमिकता के आधार पर उन इलाकों में अमल का निश्चय किया है जो घुसपैठिया प्रभावित है। क्या राष्ट्रपति झूठ बोल रहे थे? क्या इनका मंतव्य सिर्फ असम था? पर असम में तो रजिस्टर का काम, उसका प्रोसेस हो चुका था। उसके बाद बंगाल को ही सर्वाधिक घुस पैठियां प्रभावित इलाका माना जाता है। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने असम के बारे में भी देश का, खासकर हिंदुओं का यह सोचना झूठा करार दिया कि वहां घुसपैठियों के लिए डिटेंशन कैंप बन गए है और घुसपैठियों को चिंहित कर कैंपों में रखा जा रहा है। उन्होने बताया कि डिटेंशन सेंटर है ही नहीं। उनके शब्दों में- कांग्रेस और अरबन नक्सल के द्वारा उड़ाई गई डिटेंशन सेटंर वाली अपवाह, सरासर झूठ है, देश को बरबाद करने वाली है, यह नापाक इरादों से भरी है, यह झूठ है, झूठ है, झूठ है !

मगर इसे सोमवार को कोलकत्ता के टेलिग्राफ अखबार ने सप्रमाण सफेद झूठ साबित किया। अखबार ने असम के गोलपारा जिले के कदमटोला, गोपालपुर में बन रहे डिटेंशन सेंटर का फोटो छापते हुए जानकारी दी कि असम में जेलों के कम से कम छह डिटेंशन सेंटर हैं। और इसी साल भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने संसद को जवाब देते हुए बताया कि असम के छह सेंटरों में १, ०४३ विदेशी रखे हुए हैं। इनमें १०२५ बांग्लादेशी हैं और १८ म्यंमारी हैं। (संसद में यह भी जवाब है कि असम के डिटेंशन केंद्रों में २८ अवैध घुसपैठियों की मौत हुई है।)असम सरकार के ये डिटेंशन सेंटर केंद्र के गृह मंत्रालय की मंजूरी से हैं।

टेलिग्राफ की रपट के अनुसार असम में गोलपारा, कोकरझार, सिल्चर, डिब्रूगढ़, जोरहाट, तेजपुर में छह डिटेंशन सेंटर है व दस और की अनुमति केंद्रीय गृह मंत्रालय से मांगी हुई है। असम में भाजपा सरकार कोई ४७ करोड़ रू की लागत से गोलापारा जिले में तीन हजार लोगों को रखने वाला डिटेंशन सेंटर बना रही है। असम के बाहर भी महाराष्ट्र में फड़नवीस सरकार ने गैर-कानूनी घुसपैठियों को रखने के लिए जगह चिंहित की है। केंद्र सरकार द्वारा निर्देश भेजने के बाद जुलाई में जगह खोजने का काम शुरू हुआ। ऐसे ही कर्नाटक

आयेंगे उलूक तो कपोत उड़ जायेंगे

-देवनारायण भारद्वाज

वेद बहुत ही सरल ढंसे सृष्टि में उपलब्ध दृश्यमान प्रतीकों के माध्यम से अपना उपदेश हमें प्रदान कर देते है। सृष्टि में ऐसा कोई पदार्थ, पशु, पक्षी, कीट-पतंग आदि नहीं है जो साक्षात् प्रभु के उपदेश का विषय सार न हो। यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय में पशु-पक्षियों का विशद वर्णन है। अथर्ववेद के षष्ठ मण्डल के सूक्त संख्या २७ से २९ में कबूतर के गुणों का बखान किया गया है। अनेकशः वेदमंत्रों में उल्लू को मोहान्धकार का वाहक बताया गया है। आइए एक मंत्र पर विचार करें-

यौ ते दूतौ निऋत इदमेतो-प्राहितौ वा।
गृहं नः। कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु॥

(अथर्व. ६.२९.२)

अर्थात् संसार में हितकारी एवं अहितकारी दोनो प्रकार के गुण-कर्म-स्वभाव विद्यमान है। जो व्यक्ति हितकारी लक्षणों को ग्रहण करते हैं वे देवरूप कबूतर की भाँति प्यारे हो जाते हैं, और जो अहितकारी लक्षणों के वशीभूत हो जाते हैं निशाचर उलूक के समान घृणा के पात्र बन जाते हैं।

कपोल एवं उलूक के अष्टांग लक्षण

१) **स्वरूप**-कबूतर का स्वरूप चित्ताकर्षक सुन्दर होता है : जबकि उल्लू राक्षसी रूपका भंयानक प्राणी होता है। यहीकारण है कि लोग कबूतरों के पालन-पोषण एवं रक्षण की व्यवस्था करते है, और उल्लू अपना मुंह छिपाए हुए अन्धकार में पड़ा रहता है।

२) **स्वभाव**-कबूतर अहिंसक शान्तिप्रिय पक्षी है। दूसरे पक्षियों पर आक्रमण नहीं करता है। वह शान्तिपूर्ण अहअस्मितत्व का पक्षधर है। मान्य जन सुभावसरों पर दोनों हाथों से शान्ति के अग्रदूत कपोतों को आकाश में उड़ा कर हर्ष प्रकट करते है। उल्लू हिंसक राक्षसी प्रकृति का कुरूप पक्षी होता है, जिसे देखकर मानव-मन घृणा से भर जाता है।

३) **सूर्यलोकप्रियता**-अन्य बहुसंख्य प्राणियों की भाँति कबूतर भी सूरज का प्रकाश प्रिय होता है जो ज्ञान का प्रतीक है। सूरज के प्रकाश में सभी वस्तुएँ दिखाई देती है ौर हमें बोध होता है। इसको विपरीत उल्लू सूरज को पसन्द नहीं करता है। दिन में दिखाई नहीं देता हैं, जबकि रात्रि में इसकी दृष्टि तीक्षण हो कर सरलता से अपने शिकार को एकड़ती है। उलूकगम वहस्नेह सम्मान प्राप्त करने के लिए तरसते ही रह जाते है जो आनन्द मङ्गलक्षणों में सद्गृहस्य भरपूर सुस्वादु दाने कबूतरों के लिए बिखेर कर प्रकट करते हैं।

४) **कबूतर सुखे कांकर**-पाथर खा कर भी अपनी कबूतरी के साथ सुखी रहते है। कविवर बिहारी का दोहा देखिए-

पट पाखें भवर कांकरे सुपर परेई संग।
सुखी पेरवा जगत में, तू ही एक विहांग॥

सौ मनस्य-सहृदयता गुण के कारण ही कबूतर सैंकड़ों कबूतरों के झुण्ड के साथ मगन रहते हैं। उल्लू जब कभी कहीं दिखाई देता है तो झुण्ड की कौन कहे अलूकनी भी उसके साथ नहीं देखी जाती हैं।

५) **सृजनभावना**-कबूतर घर-बाहर कही भी सुविधा देखकर अपना वास बना लेते हैं, जहाँ वे अपने अण्डों से बच्चों को जन्म देते हैं। हरीतिमा युक्त स्वच्छ शोभित फल-फूल से समृद्ध वृक्ष-वनस्पति-उद्यान आदि कबूतरों को भले लगते हैं। जहाँ ये रहते है वहाँ विकास सृजन की सुरभि बहती है। इसके उलट उल्लू उजाड़, सुनसान स्थलों पर रहते हैं। या यूँ कहिए अच्छे-भले स्थान पर जहाँ पहुँच जाते हैं वह उजाड़ होजाता है। इसे अपशकुन समझ कर लोग इन्हें वहाँ से भगा देते हैं। दर्शकों के कौतूहल केन्द्र दक्षिण भारतीय मंदिर में कपोतयुग्म नियत समय पर पहुँचते हैं।

६) **सन्त-समर्पण**-मोक्षानन्द के लक्ष्य से अष्टांग अष्टांग योग की साधना करने वाले सन्त थम नियमों की सिद्धि घोर तपस्या के बाद प्राप्त कर पाते हैं, जबकि कपोत पक्षी का यह स्वाभाविक गुण होता है। परमहंस योगेश्वरानन्द महाराज ने अपने 'बहिरंग योग' नामक ग्रन्थ में अनेक प्रत्यक्षदर्शी उदाहरण दिए हैं। अन्होंने देखा था कि एक तांगे वाले ने मार्ग में अवरोध समझ कर सन्त 'झण्डू' के कई बार चाबुक दिए। अन्धाआदि अपशब्दों का प्रयोग किया। सन्त ने उससे कहा 'मुझ से भूल हो गई जो आपका मार्ग मुझ सेरुक गया। क्षमा करना भाई। एक सन्त का फोड़ा फट गया, उसमें कीड़े पड़ गए और कुछ बाहर निकलने लगे। सन्त प्यार से उन्हें भटकने-मरने से बचाने के लिए वापस पहुँचा देते उसी फोड़े में। महर्षि दयानन्द अपराधी को तहसीलदार द्वारा पकड़े जाने पर छुड़ा देते हैं, कह लेते हैं कि मैं लोगों को मुक्त कराने आया हूँ-कारागृह में डालने नहीं। मारक विषपान कराने वाले पापी को भी रुपए देकर भगा देते हैं। अन्य पक्षियों से पृथक्-पृथक् कबूतर शिकारी बिल्ली आदि के समक्ष आँख बन्द करके सर्म्पण कर देता है, बिना चू-चा लिए। दूसरे पक्षी जब ऐसे शिकारियों को चपेट में करते हैं तो चीतकार करते हैं। जन समान्य के लिए यह योग साधना दुःसाध्य असम्भव है और हेय भी है। वे इससे सहमत भी न होंगे, किन्तु इस 'कोतवृत्ति' को कोई बदल नहीं सकती है, इसके उलट अनेक निरीह पशु-पक्षियों की हत्याकारी उलूकवृत्ति की कोई प्रशंसा भी नहीं कर सकता है।

७) **संवादत-संवाहन**-प्रकृति में पाए जाने वाले असंख्य प्रजातियों के पक्षियों की कुछ विशेषताएँ होती हैं। नीर-क्षीर विवेक के लिए हंस, मानव-वाणी अनुकृत के लिए तोता, नृत्य-सौन्दर्य के लिए मयूर, आदर्श दाम्पत्य के लिए चक्रवाक, मौनमत्स्य आखेट के लिए बगुला, चन्द्र अभिलाषा के लिए चकोर, स्वाति-बिन्दू के लिए चातक, लोभी, दूर दृष्टि के लिए गृद्ध, स्वरसंगीत के लिए कोयल और चालाकी के लिए कौआ आदि जाने जाते हैं। दूत वह भीशान्ति दूत के रूप से स्मृतिधनी कपोत प्रचीनकाल से प्रयोग में लाए जाते हैं। कबूतरों को ऐसा प्रशिक्षम दिया जाता है कि वे एक दूसरे के संदेश को दूर से दूर तक पहुँचाते थे। कबूतर संवादप्रिय है। एक दूसरे से बात करने पर किसी भी मनोमालिन्य या सम्स्या के बादल छट जाते हैं, जबकि परस्पर वार्ता-भंग कर देने पर बात का बतंगड़ बन जाता है। कबूतर झुण्ड में या कबूतरी के साथ कहीं भी हो 'गुटर-गूं, गुटर-गूं' करता ही रहेगा। वह क्या कहता है 'खग ही जाने खग की भाषा।' इसके विपरीत उलूक कहीं किसी अन्ध-उजाड़ में एकाकी बैठा दिखाई दे जाएगा तो उसकी बोली शायद ही सुनाई दे। इसीलिए

स्वार्थरत मौन लोगों को 'घू-घू' कहकर इंगित किया जाता है । कबूतर जहाँ शान्ति का वाहक माना जाता है । कबूतर जहाँ शान्ति का वाहक माना जाता है, वहाँ उल्लू को लक्ष्मी का वाहन कहा जाता है । श्री-शोभा-श्रेय का नहीं- अन्धकार में आने वाली काली लक्ष्मी का वाहन है ।

५) **मन्त्र-प्रसाद**-महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बिना पुष्प-फल देने वाले वृक्ष के लिए उल्लूपक्षियों और मित्र व वरुण के लिए कबूतरों का उल्लेख करते हुए सार सन्देश इस प्रकार दिया- 'जो सब पशु-पक्षियों में गुण भरे हैं उनको जानकर व्यवहार सिद्धि के लिए सब मनुष्य निरन्तर प्रयत्न करें ।' व्यक्ति परिवार-राष्ट्र ही नहीं विश्व-स्तर पर कपोत पक्षी को उत्तम गुण-संस्कार अपनाने पर सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित होता है । इसके विपरीत लोभ-मोह-ईर्ष्यापूर्ण उलूकवृत्ति के प्रचार से सर्वत्र स्वार्थ, अन्याय एवं अत्याचार का अन्धेरा छा जाता है । जहाँ उल्लुओं का मान सम्मान होने लगता है, वहाँसे कपोत उड़ जाते है । **'अह्नेपारावतानालभते राज्यै सीचापूः'** (यजु २४, २५) दिवस के लिए कोमल शब्द करने वाले कबूतर उड़ जाते है, क्योंकि रात्रि तमस् की वृद्धि करने वाले निशाचरी सीचापू पक्षियों की वृद्धि हो जाती है । जिस राष्ट्र में सद्गुणी-सदाचारियों की उपेक्षां एवं प्रताड़ना होती है, वहाँ वे या तो मौन निष्क्रिय हो जाते हैं, या फिर दुराचारियों को पुरस्कृत होता देखकर वे भी दुराचारीयों की पंक्ति में जाकर खड़े हो जाते हैं-किसी शायर ने ठीक हीकहा है-

जब गुनहगारों पर देखी, रहमते परवर दिगार ।
बेगुनाहों ने पुकारा, हम गुनहगारों में हैं ।।

आचार्य चाण्क्य ने कहा- **'नोलूको-वलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूर्ष'** दिन में यदि उल्लू को दिखाई नहीं देता है तो सूर्य का क्या दोष है । आज न्याययुक्त परोपकारी कर्त्तव्य भावना रूपी सूर्य से मुख छिपा कर अन्याययुक्त स्वार्थी पशु प्रवृत्ति रूपी तमिसापूर्ण रात्रि में कुलक्ष्मी, सत्तापदलोलुपता, बलात्कार, हत्याओं का घृणित खेल सर्वत्र खेला जा रहा है । एक लम्बी उड़ान पर निकले हंस-हंसिनी का जोड़ा थक जाने पर किञ्चित विश्राम के लिए जब नीचे भूमि पर उतरा तो उसे बैठने के लिए उस वीरान-बंजर में एक सूखे वृक्ष का एक ठूट मिल गया । हंसनी ने उस खण्डहरग्रसित उजाड़ भूखण्ड का कारण पूछा ? तो हंस ने उस ठूंठ के कोटर में बैठे उल्लू की ओर संकेत करते हुए-बता दिया कि जहाँ श्रीमान् बस जाते है वहाँ ऐसा ही हो जाता है । यह बात उल्लू को चुभ गई । जब वह जोड़ा वहाँ से उड़ने लगा, तो उल्लू ने हंसिनी को पकड़ लिया । जब किसी प्रकार हंस उसे छुड़ाने में सफल नहीं हुआ, तो वह उसे क्षेत्र के अन्य पक्षियों को पंचायत के लिए बुला लाया । हंसिनी जैसे श्वेत-शुभ्रम-सुन्दर पक्षी को देखकर सबका मन ललचा आया । सब ने सोचा कि उल्लू के पक्ष में निर्णय करने पर यह यहीं बनी रहेगी । उनमें से किसी पक्षी ने कहा कि मैंने इसका श्रृङ्गार किया था, किसी ने कहा मैंने इसके वस्त्र बनाये थे, और अन्य किसी ने कहा कि मैंने तो इसका उल्लू के साथ विवाह पढ़ा था । निर्णय देकर पक्षी चले गए और हंस निराश हो गया । उल्लू बोला-देखा हंस महाराज इस क्षेत्रके उजाड़ होने के कारण एक मैं ही नहीं-ये सभी पंच और सरपंच भी हैं ।' यह हंसिनी इतनी स्वच्छ सफेद है कि इसके सामने मेरी आँखे नहीं खुलती । आप इसे अपने साथ ले जाएँ और यह समझते जाएँ-

बरबाद चमन के करने को, जब एक ही उल्लू काफी है । हर शाख पे उल्लू बैठे हैं, अंजामे गुलिस्तां क्या होगा ।।

कवि डॉ. गोपाल बाबू शमाज्ञ ने उसे दिन 'पत्र' में ठीक ही लिखा है-

झूठ के घर जश्न मनते, सत्य पर पहरा हुआ है । हादसे पर हादसे हैं, दुःख अधिक गहरा हुआ है । कौन सुनता है किसी की, समीको अपनी पड़ी है, शोर गुल इतना बढ़ा अब, आदमी बहरा हुआ है ।

उपरोक्त मन्त्र का पठन-पाठन एवं परिपालन हमको ऐसा प्रसाद प्रदान कर सकता है, जिससे दुःख-दावानल के उलूक हट सकते है और सुखशांति के दूत कपोत अपना शुभ सन्देश राष्ट्र में मुखरित कर सकते हैं ।

में हाईकोर्ट में दायर जवाब में केंद्र ने बताया कि विदेशी गैर-कानूनी लोगों, घुसपैठियों को लेकर उसने सभी राज्य सरकारों को २०१४ में पत्र लिख निर्देश दिया था। फिर उसके फोलो अप में २०१८ में वापिस डिटेंशन सेंटर बाबत पत्र भेजा गया। इसी केस में फिर कर्नाटक सरकार ने हाईकोर्ट को बताया कि गैर-कानूनी विदेशियों को रखने के लिए ३५ अस्थाई डिटेंशन सेंटर है।

क्या टेलिग्राफ का यह ब्यौरा, फोटो झूठ है, झूठ है, झूठ है? तभी उस अखबार में सोमवार को पेज एक पर लीड हैडिंग थीकि- क्या कह रहे हैं एक झूठा,पीएम? क्या मोदी एनआरसी जहाज को छोड़ कूद रहे हैं या वक्त चाह रहे हैं ? just who are you callinga liar] PM\&is modi just jump ing the NRC or buying time\½
अखबार ने मंगलवार को भी मोदी बनाम मोदीः दावा सत्य टेस्ट में फेल (डवकप टै डवकपः बसंपउे पिस जतनजी जमेज) शीर्षक की खबर में पाठकों को डिटेंशन सेंटर का फोटो, उनका तथ्यात्मक ब्यौरा देते हुए प्रध ानमंत्री के एक इंटरव्यू का निम्न अंश पढ़वाया-असम में एनआरसी के अनुभव से जो तस्वीर बनी है वह बहुत चिंताजनक है। और यदि चिंताजनक है तो देश में उस पर बहस होनी चाहिए। दुनिया में कोई देश कैसे ध र्मशाला बने रह सकता है? कौन सा देश है जिसने नागरिकता रजिस्टर नहीं बना रखा है? सवाल उनसे पूछा जाना चाहिए जिन्होने ७० सालो में नागरिकता रजिस्टर नहीं बनवाया, नागरिकों का रजिस्टर नहीं बनाया।

तभी लबोलुआब कि 'एनआरसी' क्या महज़ झूठ है? शहरी नक्सलियों का फैलाया झूठ है या भाजपा का सुविचारित सत्य है? यदि सुविचारित सत्य नहीं होता तो मोदी के भाषण के ठीक ४८ घंटे बाद याकि मंगलवार को केबिनेट की बैठक में राष्ट्रीय आबादी रजिस्टर (एनपीआर) पर ठप्पा लगाने की जल्दी क्यों हुई? और एनपीआर क्या एनआरसी की सीढ़ी नहीं होगा? इस पर कल।

महात्मा मुंशीरामजी और गुरुकुल की स्मृतियाँ

-श्री रैम्जे मैकडॉनल्ड

(सन् १९१३ में श्री रैम्जे मैकडॉनल्र्ड-जो उस समय ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में मजदूर दल के नेता थे और बाद में वहाँके प्रधानमन्त्री बने-भारत आये थे और उन्होंने ८ नवम्बर १९१३ को गुरुकुल का भी अवलोकन किया था। उन्होंने अपनी इस गुरुकुल-यात्रा के संस्मरण लिखे थे, जो 'डेली क्रानिकल में प्रकाशित हुए थे। उन्हीं स्मृतियों का हिन्दी अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है।)

जिन्होंने भारतीय राजविद्रोह का अध्ययन किया है उन्होंने गुरुकुल-जहाँ आर्य समाज के कुमारों को शिक्षा दी जाती है-का नाम अवश्य सुना होगा। यह सिक्षणाल्य अर्थों की वृत्तियों और आदर्शों का सबसे अधिक अनुरूप प्रतिबिम्ब है और इस प्रगतिशील धार्मिक संस्था (आर्य समाज) के विरुद्ध उठाये गये सभी सन्देह इस पर केन्द्रित हो गये हैं। इसी कारण सरकार की इस पर वक्र दृष्टि रही है। पुलिस के कर्मचारियों ने इस पर रिपोर्ट तैयार की है तथा अधिकांश अर्धगोरों के दोषरोपों का यह पात्र रहा है। मुझे बताया गया कि रात्रि में यात्रा करके, सप्ताह के अन्तिम दिनों में इस सिक्षण संस्था का अवलोकन मेरे लिए बहुत अनुकुल रहेगा। मैं दिल्ली से हरिद्वार जानेवाली एक गाड़ी में, जिसकी चाल मध्यवर्ती स्टेशनी पर विराम करने के कारण अनुमानतः दस मील प्रति घण्टा रही होगी, सवार हुआ निद्रा लाने का प्रयत्न करते हे जैसे-तैसे रात कटी।

प्रभात बेला में हरिद्वार पहुँचा, यहाँ गंगा नदी पर्वतों की गोद चोड़कर नीचे मैदान में उतरी है। स्टेशन आत्मिक पापशुद्धि की विश्वव्यापिनी और शाश्वत पिपासा से प्रेरित तीर्थ-यात्रियों से भरा पड़ा था। यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि इनमे से प्रेरित तीर्थ-यात्रियों से भरा पड़ा था। यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि इनमें बहुत से लोग बहुत दूर से आये हुए हैं। वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियाँ शीर्ष उठाई खड़ी थी। पवन इंगलिस्तान के शिशिर काल के प्रभातिक झोंकों-सा तन काटता हुआ। वह रहा था। हमने पैदल ही यात्रा प्रारम्भ की। नदी तीर पर पहुँचाते ही सामने का दृश्य खुल गया। समीपवर्ती पहाड़ियाँ, महान् हिमालय के हिममणियाॅ शिखरों के चरणों में सविनय साष्टांग प्रणिपात करती हुई-सी दीख रही थी। सरित की एक-एक तरंग, अधित्यका का एक-एक गुल्म और एक-एक हिममन्डित प्रदेश सूर्य की स्वर्णमयी आभा से भासमान था।

किनारे के पत्थरों पर एक तमेड़ (बाँस की खपच्चियों से सुबद्ध, मिट्टी के तेल के पीपों का एक बेड़ा) रखी थी। इस पर बैठा कर हमें धारा में डाला गया दूसरे ही निमेष में हम मध्यधारा में पहुँच गये। गहरे जल में हम निश्शंक बह रहे थे। अकस्मात् नदी की तली हमारे नीचे साथ-साथ सरकती हुई मालूम हुई। तमेड़ झटके के साथ टकराई। पानी छीटों में उड़ा। नन्हा बेड़ा तत्क्षण ही झील में होकर गरह जल की भंवरियों तथा लहरियों में पड़कर पूर्ववत् स्थिर हो गया। चक्कर देती हुई झूले खिलाती हुई और छोटें उड़ाती हुई नदी अपने भार को वेग से लिए जा रही थी। बन्दर हमें देखकर दाँत किटकिटाते थे। वन के अद्‌भुत दृश्य क्षणभर झांकी दिखाकर दूसरे ही क्षण लम्बी झाड़ियों में मुँह छिपा लेते थे। एक रेतीली खाड़ी में हम उतरे और एक उत्तप्त और बालुकामय मार्ग से वन में प्रविष्ट हुये। हमारे सिरों से कहीं ऊँची पीली घास खड़ी थी। पर्वतीय शीतल पवन की हिलोरें अब बन्द होगई थीं, सूर्य का ताप शनैःशनैः दुःसह होता जा रहा था। अन्त में राम वृक्षों से अंशतः आच्छादित एक लम्बी और सीधी सड़क पर पहुँचे। सुदूर, एक उन्नत बाँस के सिरे पर एक पताका दीख पड़ी। गुरुकुल दृष्टिगोचर होने लगा।

गुलाब और चमेली के पुष्पों से सुवासित मार्गों से भोजनालय और पुष्पवाटिकाओं में से होकर गुरुकुल पहुँचते हैं। चारों ओर क्रीड़ा क्षेत्र है। मध्य में वर्गाकार छात्रावास स्थित है। सिंह द्वार (प्रवेश द्वार) पर वेदों के सनातन सूत्र पवित्र 'ओ३म्' नाम से अङ्कित ध्वजा फहराती है। सम्प्रति यहाँ ३०० बालकों दीक्षा पर रहे हैं। प्रवेश के समय इनकी उम्र अनिवार्यतः ६-१० वर्ष के अन्दर होनी चाहिये। पच्चीस वर्ष की आयु तक उन्हें यहाँ रहना होता है। उन्हें मुन्शीरामजी (अव 'महात्माजी' इस उपमान से प्रसिद्ध है के न्यायोजित संरक्षण में छोड़ दिया जाता है। वह उनके पिता हैं और ये उनके बालका चार बजे प्रातः वे अपनी कठोर चीड़ के तख्तों की शय्या छोड़कर उठ बैठते हैं, व्यायाम करते हैं और शीतल जल से स्नान करते हैं। तब प्रभातिक सन्ध्या (प्रार्थना) होती है। उष्ण ऋतु में नंगे सिर, नंगे पाँव चलते हैं।

'सम्भव है, उन्हें संयोगवश कभी कठोर जीवन व्यतीत करना पड़े। अतः हमें उनको इसके लिए अभ्यास कराना चाहिए' महात्माजी ने मुस्कराते हुए मुझे कहा। पीतम्बर शिक्षणालय का गणवेश है यहाँ विद्यालय भूमि में प्रति वर्ष एक बड़ा उत्सव भरता है। सहस्त्रों की संख्या में जनता आती है। माता-पिता इसमें निम्मिलित होते हैं। विशेष झोंपड़ियाँ तैयार की जाती हैं। प्राचीन अंग्रेजी मेलों की भीड़ी एकत्र होती है। दीर्घावकाश में बालकों को उनके अध्यापक भारत भूमि प्रसिद्ध स्थानों में ले जाते हैं। इन यात्राओं में वे कश्मीर तक भी हो आये हैं। शासक वर्ग के मानस और दृष्टि के लिए, यह सब एक अशान्तिजनक समस्या कार्यकर्ता और अध्यापकों में कोई अंग्रेज नहीं, अंग्रेजी शिक्षाका माध्यम नहीं, अब विश्वविद्यालय द्वारा भारतीयों की उच्च शिक्षा के मूल स्तम्भ के तौर पर अंग्रेजी-साहित्य की पाठ्य-पुस्तकें यहाँ प्रयुक्त नहींहोतीं, विद्यार्थी सरकारी विश्वविद्यालयों में नहीं भेजे जाते। महाविद्यालय अपनी ही पदवियाँ देता है। आश्‍चर्य से स्तब्ध अधिकारियों का इसे एक ही सांस राजद्रोह कहना अनिवार्य था। परन्तु उसे गुरुकुल पर अन्तिम निर्णय कदापि नहीं कह सकते। सन् १८३५ में मैकाले ने सहकारी पत्रक में अपने विचार प्रस्तुत किए थे। तब से भारतीय शिक्षा के सम्बन्ध में किये गये प्रयत्नों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन विचारों से भारत में प्रत्येक असन्तुष्ट है। परन्तु जहाँ तक मैं समय पाया हूँ गुरुकुल के प्रवर्तकों के अतिरिक्त अन्य किसी ने भी अपने असन्तोष को नवीन प्रयोग के रूप में परिणत नहीं किया है।

एक उननक-काय, दर्शनीय मूर्ति (प्रभावपूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा) हम से भेट करने आती है। आधुनिक सम्प्रदाय का कलाकार ईसा की

प्रतिकृति घड़ने के लिये आदर्श के रूप में इसका स्वागत करता है और मध्यकालिक रूचि का चित्रकार परन्तु इसमें सन्त पीटर का रूप देखता हैं। महात्माजी हमें नमस्कार करते हैं। और उनके अभ्रक-जटित 'ओ३म्' नाम से अलंकृत सादी साज-सज्जा वाले कमरे में प्रवेश करते हैं। मुझे दिये गये कमरे में शुभ्र वस्त्र से ढकी मेज पर उज्ज्वल की पत्तियों से मिश्रित लाल फूलों से भरे दो गुलदस्ते रक्खे हुए हैं। किसी अतिथि को कमी इससे अधिक मनोहर कोठरी नहीं मिली। एक सेवक हमारे हाथों पर पानी डालता है और हमें एक अंगोछा देता है। जूते बाहर कर हम कमरे कमों प्रवेश करते हैं, जहाँ भोजन परोसा गया है। महात्माजी भोजन से पूर्व करते प्रार्थना हैं, हमारा मस्तक नत हो जाता है। मैंने अनेक प्रार्थनाएँ सुनी हैं, पर ऐसी नहीं सुनी थी। हमारे यजमान की संस्कृत स्वरों पर तूल देती हुई धन-गम्भीर पापशुद्धि के आचार सम्बन्धि संगीत का पूरा-पूरा अनुकरण कर रही है।

भोजन समाप्त होता है और हम शिक्षणालय की परिक्रमा करने को निकल पड़तें हैं। सर्वत्र सुव्यवस्था और प्रसन्नता है। उज्ज्वल चमकीले नयनों वाले बालक और प्रशान्त मुद्रा वाले बड़े कुमार, कहीं मिट्टी में खिलोने बनाते हुए, कहीं मिलके अपना पाठ दुहराते हुए, कहीं श्लोक-पाठ करते हुए और कहीं अपने गुरुका व्याख्यान सुनते हुए (क्योंकि गुरुकुल में व्याख्यान द्वारा ही अधिकृत अध्ययन होता है) श्रेणियों में बैठे हैं। विद्यालय समाप्त होता है। तुरन्त ही ब्रह्मचारिया बड़ी उमंग से क्रीडा क्षेत्र की ओर धांवा प्रारम्भ होता है। प्रत्येक छात्र गुजरता हुआ अपने आचार्य के पावों में झुककर और अंजलिबद्ध हाथों को उठाकर अभिवादन करता है।

दोपहर ढ़ल जाने पर हम वन में भ्रमणार्त जाते हैं। महात्माजी हमसे सुनी गई बातों की चर्चा करते जाते हैं। वह परिधान, अंगों का वह गठन, वह चाले ढाल, वह लम्बा दण्ड, किशोरावस्था में प्रति रविवार को प्रार्थनालय के द्वारसे देखे हुये गोलिलिके भ्रमण के दृष्य आचार्य की स्मृति कराते हैं। एक मैं ही की अंग्रेजी वेश में मण्डली और उसके अभिनयों में उपहासास्पद हो रहा हूँ। दिशा, अस्तोन्मुख सूर्य के प्रभा-मण्डल से झिलमिला रही है। अर्धचन्द्र ऊँचे सिर पर आकर रजत वर्ण की चन्द्रिका छिटका रहा है। रात्रिका पवन उसके साथ लम्बी वनस्पतियाँ बी मौन धारण कर रही हैं। कम्पित वस्तु मर्मर ध्वनि स्पष्ट सुन पड़ती है। शीत हमारे ऊपर उतर रहा है। गुरुकुल अन्धेरे में मग्न है। परन्तु छात्रावास के मध्य भाग में जलने वाली अग्नि शिखायें आस्रम के द्वारों में से दिखाई दे रही हैं। आंगन मन्त्रोच्चारण के शब्द से परिपूर्ण हो रहा है हो घासपर चटाइयाँ बिछाकर बुद्ध की प्रतिमा सी छोटी-छोटी शुभ्र मूर्तियाँ बेठी है उनमें गति नहीं है। वे हमारी ओर दृष्टि भी नही उठाते। उनकी सामूहिक प्रार्थना (सन्ध्या) समाप्त हो चुकी है। अब वे अलग काग्र चित्त होकर ध्यान मग्न हैं।

कमरे के अन्दर फर्श में स्थित एक कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित है। चारों और अध्यापक वृन्द और छात्र मण्डल बैठा है। वह अपने एक प्राचीन धर्मकार्य (अग्निहोत्र) का अनुष्ठान कर रहाहै। ज्वालाके हल्के प्रकाश में अपने सन्मुख रखे हुए एक पात्र में चम्मच डूबोते हुए और अग्नि में कुछ डालते हुए अधिष्ठाता को हम निहारते हैं। सहसा लो ऊपर उठती है। एक स्वर में कोमल वाणियाँ पुकारने लग ती हैं।' अब कुछ काल विराम होता है। ज्वाला नीचे उतरने लगती है। इतने में एक दूसरी आहुति डाली जाती है। ज्वाला पुनः लपक उठती है। कमरों की भित्तियों में और छतों पर पीली आभा छा जाती है और प्रहसन के नृत्यों के से दृश्य अङ्कित हो जाते हैं। पुनः तोतली बोलियाँ पुकारती हैं- 'हे प्रभो ! हम तुझे आत्मदान करते है जो तू एक-एक में रम रहा है।' इसी प्रकार क्रमशः विराम, प्रकाश और मन्त्र पाठ होता है। अन्त में यज्ञ-पाठ होता है, अग्नि शान्त होजाती है। गुरुकुल के आंगन को प्रकाशित करने के लिए अब एकमात्र तारे रह गये।

एक बार फिर हम अपने हाथ बाहर निकालते हैं। नौकर उन पर पानी डालता है। जूते उतार कर हम उन्मुक्त पवन, में सायंकालिक बोजन के लिए चटाइयों पर बैठते हैं। हमारे चरणों में, गंगा आह्लादकारी कलकल करती हुई, पत्थरों में से होकर वेग से बह रही है, ऊँची-ऊँची घासों की ऊँची ऊँची शिखाये चन्द्रज्योत्स्ना को झेल रही हैं। वन-भूमि ओस से व्याप्त हुई-सी झिलमिला रही है। दूर बहुत दूर से आते हुए, अस्फुट वन्य शब्द भूतों और पथभ्रष्ट आत्माओं का भान कराते हैं। मानों स्वप्न में मैं किसी को कहते सुनता हूँ-

'हमें और कुछ नहीं चाहिए। हमें शान्ति से प्रभु का भजन करने दो।' क्या यह राजद्रोह है ?

श्रद्धांजलि
डॉ. भारती जांधव जी को

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

-श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

श्रद्धांजलि

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् एवं वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास के संरक्षक आर्य समाज के धुरन्धर विद्वान्

आचार्य सत्यानन्द बेदवागीश जी को

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

-श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

श्रद्धांजलि

आर्य समाज के दानी महापुरुष

राव हरिशचन्द्र जी नागपुर को

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य जगत के पुरोधा और आर्य सम्मान पुरस्कारों द्वारा प्रतिवर्ष अनेक विद्वानों को प्रभूत ध नराशि से सम्मानित करके आर्यजगत का गौरव बढाने वाले, अनेक गुरुकुलों, गौशालाओं, अनाथाश्रमों के संरक्षक व पोषक, नागपुर महाराष्ट्र के प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति राव हरिश्चंद्र आर्य जी का निधन दिनांक २४-१२- २०१९ को दोपहर १:०० बजे नागपुर में हो गया है।

समस्त आर्यजगत के लिए बड़ी क्षति और महाशोक की घड़ी में

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

-श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

आदत बनाएं मुस्कुराने की

-च्यांग

चीन में च्यांग नाम के एक बहुत बड़े दार्शनिक हुए । एक बार अकस्मात कभी किसी दुर्घटना का शिकार होकर उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा । चीन के सम्राट को जब यह सूचना मिली तब उन्होंने विचार किया कि मुझे दार्शनिक संत का हाल जानने के लिए अस्पताल जाना चाहिए और वे स्वयं वहां पहुंचे ।

सम्राटन ने देखा कि महान दार्शनिक च्यांग के पूरे चेहरे पर पट्टियां बंधी हुई हैं । च्यांग ने सरलता से उत्तर देते हुएकहा- हां सम्राट महोदय ! बहुत दर्द होता है, जब मैं हंसता हूं, मुस्कुराता हूं । तब दर्द का प्रभावकम होता है ।

सम्राट आश्चर्यचकित हो गए और सोचने लगे कि इतनी भयंकरदुर्घटना के वाद भीहंसने-मुस्कुराने का क्या कारण है ? आखिर उन्होंने उससे पूछ की लिया । च्यांग ने कहा- महाराज ! मुस्कुराने का यह सबसे उत्तम अवसर है । यदि दुःख और पीड़ा के इन क्षणों में मैं नहीं मुस्कुराया तो शेष साधारण समय में हंसते-मुस्कुराने का क्या अर्थ रह जाएगा ? दर्द को हंस कर सहो । गम सहकर भी मुस्कुराओ दुनिया में यहां बुजदिलों की गुजर नहीं होती ।

वस्तुतः हास-परिहास का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व होता है । मुस्कुराहट से मनुष्य को आंतरिक प्रसन्नता प्रकट होती है ।

वैसे तो हम सभी मुस्कुराते है लेकिन दुःख-दर्द में आई मुस्कुराहट शिशु-सी निश्छल होती है । बचा बिना कारण भी मुस्कुराता है, हंसता है । ऐसी स्थिति दुर्लभ है, अमूल्य है, परंतु जिसने उसे पा लिया, मानो उसने जीवन के सत्य को ही पा लिया हो । प्रसन्नता जीवन का परम सत्य है ।

संस्कृत साहित्य में एक बड़ा ही सुंदर श्लोक आता हैं-

वदनं प्रसदं सदनं, सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः । कारणं परोपकारणं, ऐषां, केषां न ते वन्द्याः ॥

वदनं प्रसाद सदनं-अर्थात् जिनके मुखमंडल पर सदैव प्रसन्नता विराजमान रहती है, जो अपने जीवन में शांत, संतुष्ट और प्रसन्नचित रहते हैं । सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि, जीत-हार और सुख-दुःख की विषम परिस्थितियों में प्रसन्नता से भरपूर रहते हैं, मधुर-मुस्कान जिनके मुख मंडल पर सदैव तैरती रहती है । वे लोग इस जहान में वंदनीयहैं, धन्य हैं और पूज्यनीय हैं । क्योंकि दुनिया में स्वर्ग की स्थापना उन्हीं के कर कमलो से संभव होती है जो प्रसन्न होते हैं ।

प्रसन्नचित्त रहने के लिएकुछ विशेष चिंतन करना जरूरी है । जैसे कि कहा जाता है-ऐसे न कमाओं कि पाप हो जाए, ऐसे कार्यों में न उलझो कि चिंता काजन्म होजाए, ऐसे न खर्च करना कि कर्ज हो जाए, ऐसे मदमस्त होकर न खाना कि मर्ज हो जाए, ऐसी वाणी न बोलना कि क्लेश हो जाए और संसार की ऊबड्खावड़ राहों में ऐसे लड़खड़ाकर न चलना कि देर होजाए । प्रसन्न रहने के लिए यह महत्वपूर्ण संदेश है ।

> ***प्रसन्नता का वास उन्हीं के दिलों में होता है, जिनके मन में कोई क्लेश नहीं होता, जिनके सिर पर कर्ज नहीं होता, शरीर में मर्ज (रोग) नहीं होता, चिंता और अशांति से जिनका कोई संबंध नहीं है । उनके ऊपर प्रभु की कृपा है औरवे लोग ही दुनिया में प्रसन्न रहते हैं । क्योंकि परमात्माकी कृपा के बिना यह अनमोल गुण प्राप्त नहीं होता । जिस परप्रभु की कृपा होती है वही इस उलझन भरीदुनिया में मुस्कुरा सकता है ।***

प्रसन्नता का वास उन्हीं के दिलों में होता है, जिनके मन में कोई क्लेश नहीं होता, जिनके सिर पर कर्ज नहीं होता, शरीर में मर्ज (रोग) नहीं होता, चिंता और अशांति से जिनका कोई संबंध नहीं है । उनके ऊपर प्रभु की कृपा है और वे लोग ही दुनिया मं प्रसन्न रहते हैं । क्योंकि परमात्मा की कृपा के बिना यह अनमोल गुणप्राप्त नहीं होता । जिस पर प्रभु की कृपा होती है वही इस उलझन भरी दुनिया में मुस्कुरा सकता है ।

दुनिया की कृपा से तो मनुष्य को उलझनों के सिवाए क्या मिलता है ? दुनिया वालों को रोज मनाते हैं, लेकिन दुनिया रोज रूठ जाती है । संसार के संबंधों में प्रतिदिन विश्वसनीयता पैदा करने का प्रयास करते हैं किंतु विश्वास रोज टूट जाता है । जिससे प्यार करने का प्रयास करें तो बैर बंध जाता है । जिनके प्रति बड़ी-बड़ी आशाएं होती हैं, उन्हें निराश परोसने में देर नहीं लगती । लेकिन क्या कभी किसी को परमात्मा की भक्ति में निराशा, हताशा, चिंता, दुःख, समस्याएं और विश्वासघात मिला ? प्रभु के घर से तो सभी की झोलियां प्रसन्नता के प्रसाद से परिपूर्ण होती हैं ।

जैसे भगवान् गणेशजी एक हाथ में अंकुश लिएहुए है और दूसरे हाथ में मोदक लिएहुएहोते हैं । क्योंकि मोदक का एक अर्थ लड्डू भी है और मोदक कादूसरा अर्थ प्रसन्नता भी है ।

जो यह दर्शाता है कि अगर तुम्हारे अंदर अंकुश है अर्थात् नियंत्रण करने की शक्ति है तो जीवन में प्रसन्नता जरूर आएगी । लेकिन ध्यान रखना संसार में तुम्हारी प्रसन्नता को छीनने वाले, अनुशासन को भंगकरने वाले, नियम को तोड़ने वाले, बहुत से लोग तुम्हारे सामने आएंगे । आपके बैलेंस को हिलाने की कोशिश करेंगे, बहुत-सी चीजें, सामने आएंगी, कमी दुःख सामने आएगा, कभी अपनों का और कमी पराया का दुःख सामने आएगा, कमी अपनों का और कमी पराया का दुःख सामने आएगा, कमी अपनों का और कभी पराया का दुःख सहना पड़ेगा । दोस्तों की बेरुखी और दुश्मनों की हंसी सब सहनी पड़ेगी । यह सब तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए आएंगे, तुम्हारी प्रसन्नता को छीनने का प्रयास करेंगे लेकिन अपनी सहनशक्ति को, हिम्मत को, बढ़ाने रहना । हिम्मत टूटने मत देना, जीवन में प्रसन्नता जरूर आयेगी, आप पूज्यनीय कहलाओगे । भगवान की स्तुति, प्रार्थना, उपासना और आराधना करते हुए उससे प्रसन्नता का वरदान ही मांगना । दुनिया के वैभव संपदा औरपद-पद्दिरतिष्ठा से प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती । मकान-दुकान, कोठी-बंगले और बड़ी-बड़ी गाड़ियों में बैठने पर भी प्रसन्नता नहीं मिलती । लेकिन इसके विपरीत प्रभु की कृपा से झोपड़ी में बैठा हुआ आदमी भीहंसता-मुस्कुराता हुआ नजर आता है । गरीबी में भी भगवान के चरणों से जुड़ा हुआ भक्त धन्यवाद के मधुर गीत गुनगुनाता हुआ नजर आता

-शेष पृ. १६ पर...

स्वामीजी का पादरियों व मौलवियों से सैद्धांतिक वार्तालाप

-खुशहालचंद्र आर्य

चांदपुर मेला, २० मार्च पर सन् १८७६ में भरने वाला था, उसमें शामिल होने के लिएस्वामी दयानंद १९ मार्च को ही चाँदपुर आगए और मौलवी व पादरी भी अपने दल-बल सहित बड़ीधूमधाम से आ पहुँचे। दर्शकों की संख्या भी पचास सहस्त्र से ऊपर हो गई थी।

२० मार्च को सवेरे साढे सात बजे पण्डित मौलवी और पादरी सभी सभा मण्डप में आ गये और यथा योग्य कुर्सियों पर बैठ गये। बात ही बात में वह विशाल मण्डप दर्शकों से खचाखच भर गया। उस समय श्री मुक्ता प्रसादजी ने अपने भाई प्यारेलाल जी की और से निम्नलिखित पाँच प्रश्न सब धर्मावलंबियों के आगे रखकर उनका उत्तर माँगा।

१) सृष्टि को ईश्वर ने किस वस्तु से, कब और क्यों रचा ? २) ईश्वर सर्व व्यापक है या नहीं ? ३) ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है ? ४) वेद, बाइबिल और कुरान ईश्वर-वाक्य होने में क्या युक्ति है ? ४) मुक्ति क्या वस्तु है ? और किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ?

मुक्ता प्रसाद जी जब प्रश्न उपस्थित करके बैठ गये, तो थोड़ी देर इस बात पर ही झगड़ा होता रहा कि पहले कौन बोलें। अन्त में पादरी स्काट महाशय उठे और और प्रथम प्रस्न पर कहने लगे कि यद्यपि यह निकम्मा प्रश्न है, मेरी सम्पति में इस प्रश्न पर बोलना समय ही गँवाना है, तथापि इसका उत्तर देता हूँ। पादरी महाशय के उत्तर का सार यह था कि ईश्वर ने सृष्टि को नास्ति से बनाया है। उसके बनाने में बरसों का हमें ज्ञान नहीं। संसार के सुख के लिए सृष्टि रची गई है।

फिर पहले प्रश्न पर मौलवी महाशय ने कहा कि ईश्वर ने सृष्टि को अपने स्वरूप में बनाया है। कब बनाया, यह प्रश्न व्यर्थ है। हमें रोटी खाने से प्रयोजन है, नकि यह कब पकी थी, इससे। सारी वस्तुएं ईश्वर ने मनुष्य के लिए रची हैं और मनुष्य को अपनी स्तुति कराने के लिए निर्माण किया है।

अपने-अपने कथन में पादरी और मोलवी एक-दूसरे के कटुवचन कहतेरहे। पर जब श्री स्वामी माहाराज ने बोलना आरम्भ किया, तो सबको सम्बोधन करके बोले, 'यह मेला सत्य की जिज्ञासा से लगाया गया है। यह सबको निश्चय पूर्वक जानना चाहिए कि विजय सत्य की ही हुआकरती है। हम सबका यह कर्तव्य कर्म है कि परस्पर मेल-मिलाप से असत्य का खंडन और सत्य का मंडन करें। सत्यासत्य के निर्णय के लिए वैर-विरोध छोड़कर सम्वाद करना विद्वानों का धर्म है। कठोर और कुवचन बोलना सभ्याचार के सर्वथा प्रतिकूल है।'

पहले प्रश्न के उत्तर में महाराज ने कहा 'सृष्टि को परमात्मा ने अव्यक्त प्रकृति से बनाया। वह परमाणु रूप प्रकृति जगत का उपादन कारण है और आदि तथा अन्त से रहित है। अभाव से किसी वस्तु का बाव नहीं हो सकता। जैसे गुण के कारण होते हैं, वैसे ही कार्य के भी हुआ करते हैं। इसलिए यदि जगत् कार्य को भी नास्तिकरूप ही मानना पड़ेगा।'

महाराज ने यह भी कहा, 'यदि यह माना जाए कि ईश्वर ने सृष्टि को अपने स्वरूप से रचा है, तो जगत् भी ईश्वर रूप ही सिद्ध होगा। जैसे घड़ा मिट्टी से पृथक नहीं हो सकता, ऐसे ही जगत् और ईश्वर भी एक ही ठहरेंगे। फिर तो चोर, हत्यारा और पापात्मा होने का आरोप परमात्मा पर ही हो जाएगा। इसलिए जो लोग जगत के कारणप्रकृति को परमात्मा पृथक नहीं मानते, उनका मत प्रमाण-प्रतिकूल और युक्ति शून्य है।'

सृष्टि कब बनी, इसका उत्तर भी अन्य मतावलम्बियों के पास नहीं है। हो भी कैसे ? जब कि किसी मत को चले अटारह सौ, किसी को तेरह सौ, किसी को सात सौ और किसी को पाँच सौ वर्ष बीते हैं। इसका उत्तर तो हम आर्य लोग ही दे सकते हैं। क्योंकि हमारा ही धर्म सृष्टि के आदि में प्रवृत्त हुआ है। युगों का व्योरा वर्णण करते हुए महाराज ने कहा कि प्रत्येक शुभ कर्म में आर्य वा पंडित जो संक्लप का पाठ उच्चारण करते हैं, उसमें सृष्टि के जन्म के इतिहास को अविच्छिन्न रूप से ले आते हैं।

सृष्टि के रचने का प्रयोजन वर्णन करते हुए महाराज ने कहा, 'जाय और जगत् का कारण, स्वरूप से अनादि है। जब सृष्टि का प्रलय हो जाता है, तो उस समय भी जीवों का कर्म प्रवाह से अनादि है। जब सृष्टि का प्रलय हो जाता है, तो उस समय भीजीवों के कुछ कर्म सेष रह जाते हैं। उन कर्मों का फल-भोग प्रदान करने के लिए न्याकारी ईश्वर सृष्टि की रचना करता है। सृष्टि को रचने की शक्ति ईश्वर में स्वाभाविक है। उसने अपने सामर्थ्य से, इसलिए सृष्टि का निर्माण किया है कि लोग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करके सुख उपल्ध्य करें।' मौलवियों और पादरियों ने कुछ शंकाएं कीं, जिनका उन्होंने उसी समय सन्तोषजनक समाधान कर दिया।

महाराज के उत्तर देते समय सारी सभा में सन्नाटा छा रहा था। सभी जन प्रभावित हो रहे थे। ये सब बातें उस सभी के लोगों ने पहले सुनी ही न थी। उनको यह भी ज्ञान न था कि आर्य धर्म में भी कोई ऐसा वीर हो सकता है, जो दूसरे मतवादियों को जीतकर दिखाए। इसलिए दर्शक लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे। आर्य दर्शकों के हृदय तो प्रसन्नता देवी के क्रीड़ा केतन बन रहे थे। उस समय, सर्वत्र श्री स्वामी जी का ही यशोगान हो रहा था।

दिन के ग्यारह बजे कार्यवाही समाप्त हुई। सभी मतों के प्रतिनिधि अपने-अपने तम्बुओं में चले गये। फिर दोपहर पश्चात एक बजे सभा लगी और सबने मिलकर यह स्थिर किया कि समय बहुत अल्प है, अन्य विषयों को चोड़कर केवल मुक्ति पर ही विचार किया जावे। पर उस समय पादरियों और मौलवियों में से कोई भी पहले बोलना न चाहता था। उनको यह भ्रम हो गया था कि सवेरे हमारा

पक्ष इसलिए निर्बल सिद्ध हुआ कि हम पहले बोले थे । जब कोई न उठा, तो महाराज ने उठकर कहा, 'मुक्ति छूट जाने का नाम है । जितने दुःख हुए है, उनसे छूटकर सच्चिदान्द रहना और फिर जन्म-मरण में गिरना मुक्ति है । स्वामीजी ने यहाँ मुक्ति की अवधि बताना कोई जरूरी नहीं समझा वैसे मुक्ति की अवधि ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष की होती है । इसके पीछे महर्षि कारण यह बतलाते है कि मुक्ति शुभकर्मों का फल है । जब शुभ कर्म करने की कोई अवधि या सीमा नहीं होती है, तब फल की भी कोई अवधि वा सीमा नहीं होनी चाहिए ।'

महर्षि बताते हैं कि, 'मुक्ता का पहला साधन सत्याचरण है । दूसरा वेद-विद्या का ठीक रीति से लाभ करना और सत्य का पालन करना है । तीसरा सत्पुरुषों और ज्ञानी जनों का सत्संगकरना । चौथा योगाभ्यास द्वारा अपनी इंद्रियों और आत्मा को असत्य से निकालकर सत्य में स्थापित करना । पाँचवाँ ईश्वर की स्तुति करना, उसकी कृपा का यश वर्णन करना और परमात्म-कथा को मन लगाकर सुनना और छठा साधन प्रार्थना है । प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए, हे ईश्वर कृपानिधे । हमारे पिता मुझे असत से निकालकर सत में स्थिर करो । अविद्यान्धकार और अधर्माचरण से पृथक् करके ज्ञान और धर्माचरण में नियुक्त करो । जन्म-मरण रूप संसार से मुक्त कर अपार दया से मोक्ष प्रदान करो ।' इस प्रकार महाराज ने नाना युक्तियों से अलंकृत भाषण किया । फिर कुछ परस्पर समालोचना के अनन्तर सयांकाल का कार्य समाप्त हो गया ।

इस लेख के लिखने का प्रयोजन मेरा यह है कि उस समय महर्षि के पंडित्य का लोगों पर बहुतच अधिक प्रभाव पड़ता था । उनके आकर्षक व्यक्तित्व, मधुर वाणी और समझाने की सरल शैली से लोग इतने अधिक प्रभावित होते थे कि वे गहन से गहन विषय को भी आसानी से समझ लेते थे । इसीलिए उनके व्याख्यानों में बहुत भीड़ जुड़ा करती थी और उनके भाषण सुनकर लोग बड़े प्रसन्न होते थे । उस प्रभाव का अब हम अभाव देखते हैं। है । प्रसंग के अनुकूल उर्दू के एक शायर ने कहा है-

दिल दे तो इस मिजाज का परवर दिगार दे ।
जो रंज की घड़ियां भी खुशी से गुजार दे ।।

एक सूफी संत की पत्नी के देहावसान पर जब लोग शोक प्रकट करने के लिए गए तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने देखा कि वहसंत अपनी धर्मपत्नी के इंतकाल पर मातम नहीं बल्कि प्रसन्नता से वाद्ययंत्र के साथ गीत गा रहा है । लोगों ने कहा- महात्मन् ! आपकी धर्मपत्नी संसार को छोड़कर गई हैं और आप गीत गा रहे हैं, यह शोक मनाने का कौन सा तरीका है ? अगर आप उनके गम में रुदन नहीं करते तो कोई बात नहीं लेकिन प्रसन्नता से गीत गाना ये शोक प्रकट करने की कौन-सी रीत है ?

संत ने मुस्कुराते हुए कहा- बंधुओं ! मेरी अर्धांगनी बत्तीस वर्ष तक मेरे संग रही । हमारा परस्पर बहुत प्रेम था, आज वह ईश्वरीय आज्ञानुसार मुझसे जुदा हुई है लेकिन है तो इस संसार में ही और मुझे रोता हुआ देखकर उसे भी अपार दुःख होगा । इसीलिए मैं प्रसन्नता पूर्वक गाना गाकर उसे विदाई दे रहाहूं । यह जो गीत में गा रहा हूं उसे बहुत माता था । इसे श्रवण कर वह अवश्य प्रसन्न होगी ।

इस दुःखभरी दुनिया में दो ही चीजें हैं- प्रसन्नता से आनंदित होकर गाओ अथवा दुःखों से पीड़ित होकर रोओ । जिंदगी प्रसन्नता का दूसरा नाम है । हर क्षण, हर पल मुस्कुराने का नाम जीवन है । महाभारत के युद्ध में दोनों सेनाओं के बीच में खड़े होकर भगवान श्रीकृष्ण ने निराशा और हताशा से भरे हुए अर्जुन को हंसते-मुस्कुराते हुए गीता का उपदेश दिया था । इससे यह ज्ञात होता है कि जीवन संग्राम में कैसी भी स्थिति-परिस्थिति हो लेकिन प्रसन्नता से ओत-प्रोत रहना हमारे लिए अति आवश्यक है ।

श्लोक में आगे कहा- 'सदयम् हृदयम्' अर्थात् दुनिया के मेले में वे लोग वंदनीय हैं- जिनका हृदय दया से भीगा हुआ है । दूसरे के दुःखों में शामिल होने के लिएजो सदैव तत्पर रहते हैं, स्वार्थ नहीं परमार्थ की सोचते हैं और जीवन के किसी भी मोड़ पर दुःख पीड़ा से संतप्त व्यक्ति की सहायता करने के लिएजो हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं । वे लोग वंदनीय हैं, अनुकरणीयहैं औरपूजनीय हैं ।

इस सुंदर श्लोक का तीसरा बिंदु है- 'सुधामुचो बाचः' जिनकी वाणी से अमृत बरसता है, कड़वाहट भरे विषाक्त वचनों का जो प्रयोग नहीं करते, हमेशा सुख-शांति और सद्भावनाओं से युक्त बचनों का जो प्रयोगकरते हैं वे लोगवंदनीय हैं । याद रखें दुनियां में अगर किसी का कुछ याद किया जाता है तो वे उसके जीवन के अंति शब्द याद किए जाते हैं । परंतु यह भी दुनिया में किसी को पता नहीं कि उसके कौन-से वचन अंतिम होंगे । इसलिए इंसान को सदैव हितकारी और शास्त्रोक्त सुंदर वचनों को प्रयोग करना चाहिए । आगे कहा- 'करणम् परोकरणम्' जिनके हाथ सदा दूसरों का भलाकरने के लिए उठते हैं, सहयोग और सहानुभूति जिनके जीवन का अंग बन गया है, वे लोग इस संसार में वंदनीय है । परोपकार करने के लिए जिनके हाथ सदैव आतुर रहते हैं, वे किसके लिए वंदनीय, आदरणीय नहीं होते ? वे तो सबके लिए सम्माननीय होते हैं । जैसे दुनिया में सूर्य पूजनीय है, क्योंकि सबसे ज्यादा परोपकारी है । वैसे जो व्यक्ति ज्यादा परोपकारी होगा वह ज्यादा पूजनीय होगा ।

न बन्धुमध्ये धनहीन जीवनम् (पञ्चतन्त्र)

वरं वनं व्याघ्रगजेनद्रसेवितं,
द्रुमालये पञ्चफलाम्बुभीजनम् ।
तृणानि शय्या च बल्कलं, न
बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम् ।।

भावार्थ : कहावत है कि- बुरे दिनों में कोई किसी का नहीं होता सच ही है सिंह, हाथी आदि से धिरे हुए वन में चले जाना श्रेयस्कर है, वृक्ष के नीचे घर बनाकर पत्तों फलों औरजल को खा पीकर भोजन से निर्वाह कर लेना ठीक है, घांस की शय्या और बल्कल (वृक्षाजिन) का वस्त्र बनाकर दिन गुजारना भी अच्छा है परन्तु गरीब होकर अपने कुटुम्बीजनों के मध्य रहना उचित नहीं है । निर्धनावस्था में सभी लोग हँसी उड़ाते हैं कुटुम्बीजन तो विशेथतया उपेक्षा करते हैं । - सुभाषित सौरभ

జననీ జన్మభూమిశ్చ స్వరాదపి గరీయసీ

-డా॥ కోదూరి సుబ్బారావు

(... గత సంచిక తరువాయి...)

దానికి శ్రీరాముడు అత్యంత వ్యధితుడై ఓ దేవీ ! మీ రిట్లనుట ఉచితము కాదు-

శ్లో॥ అహం హి వచనా ద్రాజః పతేయమపి పావకే భక్షయేయం విషం తీక్ష్ణం మజ్జేయ మపి చార్ణవే ॥

ఓ తల్లీ ! నీ విట్లు పలుకతగదు. నేను రాజాజ్ఞను పాటించుచు అగ్నిలో దుముకమన్న దుమికెదను. ఘోరమైన విషాన్ని తినమన్న తినెదను. సముద్రమున మునగమన్న మునిగెదను.

శ్లో॥ నియుక్తో గురుణా పిత్రా నృపేణ చ హితేన చ తద్బ్రూహి వచనం దేవి రాజ్ఞో యదభి కాంక్షితమ్ ।

కరిష్యే ప్రతిజానే చ రామో ద్వి ర్నాభిభాషతే ॥

-వా.రా. అయోధ్యాకాండ (18-28, 29, 30)

వారు నాకు గురువులు, తండ్రి, మహారాజులు. ఇంతేగాక, నా హితాన్ని శుభాన్ని కాంక్షించే ఆప్తులు. వారి ఆకాంక్ష ఏదైనను తప్పక నెరవేర్చెదను. ఈ రాముడు ఆడినమాట తప్పువాడు కాదు. రెండు రకాలుగా మాట్లాడటం ఈ రాముడెప్పుడును చేయలేదు. ఇప్పుడు చేయడు, ఇకముందు చేయబోడు" అన్నాడు.

అప్పుడు కైకేయి సంతృప్తిని చెంది జరిగిన వృత్తాంతమంతా వివరించి చెప్పింది. అందుకు శ్రీరాముడు కొంచెంగూడ బాధపడకపోవడమే గాక- 'మంచిది. పితృవాక్య పరిపాలన చేస్తాను. నా కన్నతల్లి ఆశీర్వచనాలు పొంది వనాలకు బయలుదేరుతా"నని చెప్పి తల్లి అంతఃపురానికి బయలుదేరాడు. ఇంత జరిగినా శ్రీరాముని వదనంలో ఎట్టి విషాదం కనబడలేదు. ఆ విషయం వాల్మీకి మహర్షి ఈ విధంగా వర్ణిం చాడు.

శ్లో॥ న వనం గంతుకామస్య త్యజతశ్చ వసుంధరామ్ । సర్వలోకాతిగ స్యేవ లక్ష్యతే చిత్తవిక్రియా ॥ -అయోధ్యకాండ (19-33)

సమస్త రాజ్యాన్ని వదలి వనవాసానికి వెళ్ళబోయే శ్రీరామునిలో సామాన్య జనులకన్న భిన్నంగా (సుఖదుఃఖాలను మానావమానాలను సమానంగా చూచే పరమ యోగీశ్వరుని వలె) ఎట్టి మనోవికారము కనబడలేదు.

అట్టి స్థితప్రజ్ఞతతోకూడి శ్రీరాముడు తల్లి కౌసల్యాదేవి మందిరానికి వెళ్ళటం జరిగింది. అప్పుడామె స్వయంగా వేదమంత్రాలు పఠిస్తూ అగ్నిలో ఆహుతులిస్తూ కనబడింది. స్త్రీలు వేద మంత్రాలు చదువకూడదనీ, అగ్ని హోత్రం చేయకూడదనీ కొందరంటారు. అట్టివారు వాల్మీకి రామాయణంలోని ఈ క్రింది శ్లోకాలు చదివితే కనువిప్పు కలుగుతుంది.

శ్లో॥ సా క్షౌమవసనా హృష్టా నిత్యవ్రతపరాయణా । అగ్నిం జుహోతి స్మ తదా మంత్రవత్ కృతమంగళా ॥

నిత్య అగ్నిహోత్ర వ్రతపరాయణి యైన కౌసల్యాదేవి అప్పుడు పట్టువస్త్రములు ధరించి వేదమంత్రాలను పఠిస్తూ ప్రసన్నంగా అగ్నిహోత్రంలో ఆహుతులిస్తున్నది.

శ్లో॥ ప్రవిశ్య చ తదా రామో మాతు రంతః పుర్ శుభమ్ । దదర్శ మాతరం తత్ర హవయంతీం హుతాశనమ్ ॥ దేవకార్యనిమిత్తం చ తత్రాప శ్యత్సముధ్యతమ్.

రాము డపుడు శుభమగు తల్లి యొక్క అంతఃపురంలో ప్రవేశించి అచట అగ్నిలో ఆహుతులిచ్చుచున్న తల్లిని చూచెను. దేవపూజయైన అగ్నిహోత్ర నిమిత్తమై సమకూర్చబడిన వస్తు సముదాయమును చూచెను.

రాజాన్ మాల్యాని శుక్లాని కృసరం తథా సమిధః పూర్ణ కుంభాం శ్చ దదర్శ రఘు నందనః ।

రఘునందనుడైన శ్రీరాము డచట పెరుగును, అక్షతలను, నేతిని, కుడుములును, హోమద్రవ్యాలను, పేలాలను, తెల్లని పుష్పమాలలను, పాయసాన్నమును, నువ్వులును, సమిధ లను (మామిడ, మోదుగ, మేడి, రావి మొదలగు కట్టెలను) నీటితో నిండిన కలశములను దర్శిం చెను.

-వాల్మీకి రామాయణం-అయోధ్యాకాండ (20-15, 16, 17, 18)

కౌసల్యాదేవి ఏకాగ్ర చిత్తయై తన వ్రతములో నిమగ్నమై కొంత తడవైన తదుపరి శ్రీరాముని చూచింది. రాముడు ప్రణమిల్లటం, తల్లి ఆశీస్సులు తెలపటం జరిగిన తదుపరి భోజనము చేయుమని ఆసనము వేసి పదార్థములు వడ్డించ బోవగా రాముడు చేతులు జోడించి వినయంగా "నేను వనవాసదీక్షను గైకొని దండకారణ్యము నకు పోవుచున్నాను. అట్టి నాకు ఈ ఉత్తమ ఆసనముతో పనియేమి ? నన్ను ఆశీర్వదించి పంపు'మని జరిగిన వృత్తాంతం సంక్షిప్తంగా తెలిపాడు. దానితో కౌసల్యాదేవి అత్యంత శోకా నికి గురియై మూర్ఛపోయింది. కొంతసేపటికి తేరుకొని వనవాసానికి కారణమైన వారినందరిని నిందిస్తుంది. అప్పుడు లక్ష్మణుడు- అమ్మా ! మీ రనుమతినిస్తే నేను మహారాజును, కైకేయిని, భరతుని, ఎదిరించిన అయోధ్యావాసులను అందరిని చంపివేసి రామునికి రాజ్యాభిషేకం చేస్తాణ నన్నాడు.

లక్ష్మణు డన్న ఆ వీరవచనాల నాలకించి కౌసల్య రాముని వనాలకు వెళ్ళవద్దని చెప్పడం ప్రారంభిస్తుంది. రాముడు ఎంత నచ్చజెప్పినా వినకపోగా- 'ఓ రామా ! ధర్మజ్ఞ ! నీకు ధర్మాచరణమే ముఖ్యమైతే ఇచట ఉండియే మాతృసేవ చేసి ధర్మము నాచరించవచ్చు గదా ! మాతృసేవ కంటే ఉత్తమమైన ధర్మ మేముంది?' అంటుంది చివరగా ఈ విధంగా నిలదీస్తుంది-

శ్లో॥ యథైవ రాజా పూజ్య స్తే గౌరవేణ తథాస్మ్యహమ్ । త్వాం నాహ మనుజానామి న గన్తవ్య మితో వనమ్ ॥

అయోధ్యా కాం. 21-24

"ఓ రామా ! నీకు మహారాజుపూజ్యుడైనట్లే తల్లినైన నేనును పూజ్యురాలనే గదా ! నీవు అరణ్యాలకు పోవటానికి నేను అనుమతించను" అంటుంది. అప్పుడు శ్రీరాముడన్న మాటలు ఆలోచించతగినవి. "అమ్మా ! నీవు నాపై గల అత్యంత మమకారంతో నీ వట్లనుచున్నావు కాని (ఆడినమాట తప్పని వంశము కదా మనది) అది ధర్మం కాదు.

శ్లో॥ నాస్తి శక్తిః పితుర్వాక్యం న అతిక్రమితుం మమ । ప్రసాదయే త్వాం శిరసా గంతు మిచ్ఛా మ్యహం వనమ్

-వా.రా. అయోధ్యాకాండ (21-29)

"అమ్మా ! నాకు పితృవాక్యము నతిక్రమింప శక్తి లేదు. నీకు సాష్టాంగ నమస్కారము చేయుచున్నాను. నేను వనముల కేగ గోరుచున్నా" నని అన్నాడు.

తదుపరి లక్ష్మణునివైపు చూచి- 'ప్రియ సోదరా ! నీకు నాపైన గల శ్రద్ధాభక్తులు తెలుసు. నీ శక్తి యుక్తులు, పరాక్రమము ఎంత టివోనే నెరుగుదును. కాని, నీ వచనము లన్నియు ధర్మా నుకూలంగా లేవు.

శ్లో॥ ధర్మో హి పరమో లోకే ధర్మే సత్యం ప్రతిష్ఠితమ్ । ధర్మ సంశ్రిత మేతచ్చ పితుర్వచన ముత్తమమ్ ॥ (21-40)

నిశ్చయంగా ఈ లోకంలో ధర్మమే సర్వ శ్రేష్టమైనది. ధర్మమందే సత్యం ప్రతిష్ఠితమై ఉంటుంది. ధర్మానుకూలమైనది కనుకనే తల్లి ఆజ్ఞకన్న తండ్రి ఆజ్ఞ ననుసరించటం ఉత్తమం.

వీరుడవగు లక్ష్మణా ! ధర్మము నాశ్రయించి యుండువా డెన్నడును తల్లిదండ్రుల వాక్యము లను, వేదవేత్తలైన బ్రాహ్మణుల వచనములను ఆచరింతునని చెప్పి ఆచరింపకుండా ఉండ కూడదు.

ఈ విధంగా చాలా వచనాలతో లక్ష్మణుని శాంతింపజేసి చివరగా తల్లి వైపు చూచి-

శ్లో॥ మయా చైవ భవత్యా చ కర్తవ్యం వచనం పితుః। రాజా భర్తా గురుః శ్రేష్ఠః సర్వేషా మీశ్వరం ప్రభుః ॥

-వా.రా. అయోధ్యాకాండ (21-48)

అమ్మా ! మహారాజు గారు మీకు పతి, నాకు తండ్రి, గురువు, అందరిని పాలించి పోషించే ప్రభువు. కనుక, మన మిరువురము తండ్రిగారి ఆజ్ఞను పాలించుటయే ఉత్తమం.

పై విధంగా శ్రీరాముడు చెప్పిన స్వాంతన వాక్యములతో తల్లి శాంతించి ఆశీర్వదించి పంపింది. లక్ష్మణజననియైన సమిత్రయు లక్ష్మ ణునికి ఆదర్శమైన వ్యవహార నీతిని బోధించి పంపింది.

"ఓ పుత్రా ! నీవు నీ జ్యేష్ఠ సోదరుడైన రాముని సేవాశుశ్రూషలలో బద్ధకించవద్దు. నాయనా ! విపత్తిలోను సంపత్తిలోను రాముడే నీకు ఆశ్రయం. పెద్దవారి ఆజ్ఞను పాలించుటే సజ్జనుల లక్షణం. ఇది రఘువంశము యొక్క సనాతన సదాచారం. దానంచేయుటం, వ్రతాన్ని చక్కగా పూర్తిచేయటం, సంగ్రామంలో విజ యమో వీరస్వర్గమోగా పోరాడటం అనేవి రఘుకుల సదాచారం. కనుక నీవు రాముని వెంట వనములకు బయలుదేరు"మని ప్రోత్స హించి, చివరగా

శ్లో॥ రామం దశరథం విద్ధి మాం విద్ధి జనకాత్మజమ్ । అయోధ్యా మాటవీం విద్ధి గచ్ఛ తాత యథా సుఖమ్ ॥-అయోధ్యా కాండ (33-8)

"ఓ కుమార ! వనవాసంలో నీవు శ్రీరామ చంద్రునే తండ్రిగా దశరథ మహారాజుగా తలంచు. సీతాదేవిని తల్లినైన నన్నుగా భావించు. వనమునే అయోధ్యగా భావించి వ్యవహరించు. సుఖముగా పోయిరా నాయనా ! అని దీవించి పంపింది.

ఆహా ! ఎంత గొప్ప ఉపదేశం ! ఎంత గొప్ప సదాచారం ! పెద్దలయెడ ఎంతటి ఆద రణ ! కనుకనే లక్షల సంవత్సరాలు గడిచి పోయినా ఆనాటి శ్రీరాముని సోదరులు, తల్లులు, వారి బంధు బాంధవులు, చివరకు అయోధ్యావాసులు పలికిన పలుకులు, ఆచరించిన సదాచార్ నేటికిని సంవత్సరాల పూర్వం జరిగిన మహాభారతకాలం వరకు కొనసాగింది. అందుకు భీష్మపితామహుని జీవితమే నిదర్శనం.

ఆర్య చక్రవర్తి సామ్రాట్టయిన శంతన మహారాజు గంగానది సమీపంలో విహరిస్తూం డగా దాశరాజు పుత్రిక సత్యవతి కనబడుతుంది. ఆమె విలక్షణ సౌందర్యం శంతనుని ఆకర్షి స్తుంది. మాటలు కలపటంకోసం-ఓ సుందరీ! నీవెవ రవు ? ఎవరి పుత్రికవు ? ఏమి చేస్తుం టావు ? అని ప్రశ్నించాడు. అందుకు ఆ కన్య 'ఆర్యా ! నేను దాశరాజు పుత్రికను. నా తండ్రిగారి ఆదేశం మేరకు నౌకను నడుపుతూ వుంటాను' అన్నది. అప్పుడు శంతనుడు దాశరాజు వద్దకువెళ్ళి 'నీ కుమార్తెను వివాహం చేసుకోగోరుచున్నా' నన్నాడు. అందుకు దాశరాజు 'ఓ రాజా ! నేను నా కన్యకు తగిన వరుని కోసం వెదుకుచున్నాను. నీ కివ్వటానికి నాకు సమ్మతమేకాని, నాది ఒక షరతున్న దన్నాడు ఏమిటా షరతని అడుగగా-

శ్లో॥ అస్యాం జాయేత యః పుత్రః స రాజా పృథివీపతే । త్వదూర్ధ్వ మభిషేక్తవ్యో నాన్యః కశ్చన పార్థివ ॥

-మహాభారత ఆదిపర్వం (100-56)

ఓ పృథివీపతీ ! రాజా ! ఈ కన్య గర్భం నుండి పుట్టిన పుత్రునకే మీ తరువాత రాజ్యాభి షేకం చెయ్యాలి. మరి ఏ యితర రాకుమారునికి కాదు" అన్నాడు.

ఈ షరతు శంతన మహారాజుకు నచ్చలేదు. అప్పటికే శంతనునకు 25 సంవత్సరాల పైబడిన సర్వశుభలక్షణ యుక్తుడైన పుత్రు డొకడున్నాడు. రాచకార్యాలను, వినోదవిలాసాలను కట్టిపెట్టి దీనవదనుడై అంతఃపురంలోనే గడపసాగాడు. ఇది గమనించిన దేవవ్రతుడు 'నీ చింతకు కారణమే' మని నిలదీశాడు. దానికి శంతనుడు నేరుగా సమాధానంచెప్పలేక 'నాకు నీ వొక్కడనే పుత్రుడవు. నేను మరి కొందరు పుత్రుల పొంద గోరుచున్నా' నన్నాడు.

అనంతరం దేవవ్రతుడు తండ్రిగారి విచారా నికి మూలకారణం తెలిసికొని నిషాదరాజు వద్దకు వెళ్లి నీ కుమార్తెను మా తండ్రి గారికిచ్చి వివాహం జరిపించమని కోరాడు. నిషాదరాజు తను ఇంతకుపూర్వం చెప్పిన షరతునే వల్లిం చాడు. దానిని సమాధాన పరుస్తూ దేవవ్రతుడు ఈ షరతును నేను అంగీకరిస్తున్నాను. వివాహం చెయ్యమంటాడు. దానికి నిషాదరాజు ఒక సందేహం వెలిబుచ్చుతాడు- 'ఓ రాకు మారా ! మీ మాటలను నేను నమ్ముతాను. కానీ, మీకును పుత్రులు కలిగి, నా కుమార్తెకును పుత్రులు కలిగితే వారిమధ్య సంఘర్షణ జరగ వచ్చును కదా ! అన్నాడు. దానికి దేవవ్రతుడు కొద్ది సేపు ఆలోచించి ఈవిధంగా భీకరమైన ప్రతిజ్ఞ చేశాడు

శ్లో॥ దాశరాజ నిబోధేదిం వచనం మే నరోత్తమ । శృణ్వతాం భూమిపాలానాం యద్ బ్రవీమి పితుః కృతే ॥

ఓ నరశ్రేష్ఠా దాశరాజా (నిషాదరాజా) ! నా వచనములను వినుము. మా తండ్రిగారి హితాన్ని కోరుతూ సమస్త భూమండలంలోని రాజుల సాక్షిగా ఈ ప్రమాణం చేస్తున్నాను.

శ్లో॥ రాజ్యం తావత్ పూర్వమేవ మాయా త్యక్తం నరాధిపాః । అపత్యహేతోరపి చ కరిష్యాఽద్యవినిశ్చయమ్ ॥

నరాధిపులైన ఓ రాజులారా ! నేను రాజ్య మును ఇంతకు పూర్వమే త్యాగం చేసితిని. ఇప్పుడు నా సంతానాన్ని కూడా త్యాగం చేయు చున్నాను. ఇది నిశ్చయము.

శ్లో॥ అద్యప్రభృతి మే దాశ బ్రహ్మచర్యం భవిష్యతి । అపుత్రస్యాపి మే లోకా భవిష్యన్త్య క్షయా దివి ॥

-మహాభారత ఆదిపర్వం (100-94, 95, 96)

'ఓ దాశరాజా ! నేటి నుండి నేను ఆజీవన బ్రహ్మచర్యవ్రతదీక్షను స్వీకరించుచున్నాను. నాకు పుత్రులు లేకున్నను ఈ మహావ్రతంవల్ల ద్యులోకంలో-రాబోవు జన్మలో నాకు అక్షయ సుఖములు లభించగల"వని భీషణప్రతిజ్ఞ చేశాడు. అప్పటినుండి అతడు భీష్మ నామంతో లోకంలో ప్రసిద్ధిని పొందాడు.

ఎంతటి గొప్ప త్యాగం ! ఎంతటి గొప్ప పితృభక్తి 1 కనుకనే భీష్ముని ఖ్యాతి నేటికిని నిలిచియున్నది. ఇకముందును నిలిచియుండ గలదు. అస్తు.

జన్మభూమి

పూర్వ ప్రకరణాన్ని చదివిన వివేకవంతులైన పాఠకులకు జనని విలువ తెలిసియే యుం టుంది. ఇక జన్మభూమి విలువ తెలియాలంటే మరికొంత సూక్ష్మంగా ఆలోచించవలసి ఉం టుంది. జనని మన శీరర నిర్మాత్రియైనట్లే జన్మభూమియును మన శరీర నిర్మాత్రియే. మన శరీరంలో ఉండే ఇనుము (ఐరన్), సున్నము (కాల్షియం), భాస్వరం (ఫాస్ఫరస్)

మొదలైన లోహ లవణాదులన్నీ కొన్ని మార్పులతో వృక్షాల ద్వారా భూమిలో నుండి లభించినవే కదా ! భూమిలోని లోహ లవణాలను (ఇనార్గనిక్ సాల్ట్స్‌ను) వృక్షాలు సేంద్రియ లవణాలు (ఆర్గానిక్ సాల్ట్స్)గా మార్చి మన కందిస్తాయి. వాటిని తిని జీర్ణంచేసుకొని మన శరీరాలు పెరిగి పెద్ద వవుతాయి. తల్లి రసరక్తాదులే బిడ్డ రసరక్తాదులై బిడ్డ ఆమె శరీరాంశమైనట్లుగానే మనం పుట్టి పెరిగిన భూమాత సారమే మన శరీరాంశం కావటం వల్ల ఆమెకు మనం పుత్రుల మనుటలో అతిశయోక్తి ఏమున్నది ? కనుకనే -

"మాతా భూమిః పుత్రోహం పృథివ్యాః"

-అథర్వ వేదము (12-1-22)

ఓ భూమాతా 1 నీవు నాకు తల్లివి. నేను నీకు పుత్రుడను-పుత్రికను" అనమంటుంది వేదం.

మన శరీరాలేగాక మన మనుభవించే ప్రతీ భోగ్యవస్తువు భూమినుండి ఉత్పన్నమైనదే. మనం నివసించు గృహారామ విలాసమందిరాలు, భుజింజు సమస్త భక్ష్య భోజ్యలేహ్య చోష్యములు, సేవించు దుగ్ధ దధి రసాదులు, ధరించు సువర్ణ రజితాది ఆభర ణాలు, మణి మాణిక్యాది సమస్త రత్నాలు, చీని చీనాంబరాది సమస్త దుస్తులు, పేదవాడు మొదలుకొని అత్యంత భాగ్యవంతుని వరకు ఉపయోగించు గృహోపకరణాది వస్తువులు అన్నీ భూమినుండి జనించినవే కదా ! ఇవన్నీ రూపాంతరం చెందిన పృథివియే కదా !

అయితే, అల్పజ్ఞుడు అల్పశక్తి మంతుడునైన మానవుడు తాను నివసించే భూఖండాన్నే (దేశాన్నే) జన్మభూమిగా తలుస్తాడు. ఇదియును ఒక అంశంలో యథార్థమే. పృథివి ఎంత విశాల మైనదైనా తన శరీరం తన దేశ పృథివీ సంపద తోనే పెరిగి పెద్దదయింది. తన రాజు వల్ల లేదా ప్రభుత్వం వల్లా, తన దేశ ప్రజల వల్లా అతడు పాలించబడుతున్నాడు. పోషింపబడుతున్నాడు. తన దేశ అతిథి, ఆచార్యులవల్ల తాను విద్యావం తుదు జ్ఞానవంతుడు అయ్యాడు. తన దేశ సంస్కృతితో సంస్కా రవంతుడు, వివేకవంతుడు అయ్యాడు. తన దేశ నదీనద ముల, సెలయేరుల జలాలను గ్రోలుతూ పక్షుల కిలకిలారావాలలో గోధూళిలో పరవశించి ఆటలాడుకుంటూ బాల్యాన్ని గడిపింది ఈ దేశంలోనే. అందుచే తన కుటుం బంతో మమకారబంధ మేర్పడినట్లే ఈ దేశంలో గల సంపదలతోనూ మమకారబంధ మేర్పడటం సహజమే. అది అవసరంకూడా, తాను ఈ విశాల ప్రపంచంలోని మానవుడే అయినా తన కుటుంబంపట్ల తనకు బాధ్యత లున్నట్లే తన దేశంపట్ల ప్రతివ్యక్తికి కొన్ని బాధ్యతలుం టాయి. తన ఉన్నతికి దేశం, దేశ ఉన్నతికి తాను కారణం కావటం అనేక సంద ర్భాలలో జరుగుతుంది.

విజయకాంక్షగల మనసు ప్రోత్సహించేది మన దేశ ప్రజలే. విదేశీయులు కారు. జీవన పోరాటంలో మనం విదేశాల నాశ్రయించినా, విదేశీయులు మన కాశ్రయమిచ్చినా ఆపదలో మనను ఆదరించి అక్కున చేర్చుకునేది మన మాతృభూమియే.

అత్యంత భోగభాగ్యాలతో అతి విలాస జీవితం గడిపే అభివృద్ధి చెందిన దేశాలైనా మన మాతృభూమి ఆదరణముందు అవి ఏపాటివి ? 'స్వర్గణ కన్నా జన్మభూమి గొప్ప' దను శ్రీరాముని మాటలలో అతిశయోక్తి ఏముంది ? ఇంతకు మించి, భారతావని మన జన్మభూమి కావటం ఎన్నో జన్మల సుకృత ఫలం. ఈ మాటలును అతిశయోక్తులు కావు. చరిత్రను పరిశీలిస్తే మీకే అవగతమౌతుంది. సంక్షిప్తంగా .....

ధరిత్రీమాత మన భారతమాత

ప్రవంచ చరిత్రను వరిశీలిస్తే ఏ దేశంలోనూ ఉద్భవించనంత ఎక్కువగా ఋషులు, మహ ర్షులు, త్యాగులు, తపస్వులు, వీరులు, వీరవని తలు, విద్వాంసులు, విజ్ఞానవేత్తలు, ఆదర్శ వురుషులు, ఆదర్శనారీమణులు ఈ దేశంలో ఉద్భవించారు. అట్లని ఇతర దేశాలలో విద్వాంసులు, వీరులు, ఆదర్శపురుషులు జన్మింపనే లేదని అర్థం కాదు. ప్రపంచ చరిత్రలో అక్కడక్కడ అట్టి సుగుణ సంపన్నులున్నారు. కాని, వారిని మన చారిత్రిక పురుషులతో పోల్చిన గణనకే రాకుందురు. ప్రపంచ దేశాల ఇతిహాసాలలో భారతీయేతి హాసమే అన్నిటికన్న ప్రాచీనమైనది. బేబిలు ననునరించి అదిమానవులైన ఆదాము అవ్వలు ఉద్భవించి నాలుగువేల సంవత్సరాలకన్న ఎక్కువ కాలేదు. ఖురాన్ చెప్పే చరిత్రకూడా అంతే, కాని, మన చరిత్ర వందల కోట్ల సంవత్సరాలది. భారతీయ జ్యోతిష్యగ్రంథమైన నూర్య నిద్ధాంతాన్ననుసరించి మనం మన ధార్మిక కర్మలలో, శుభకార్యాలలో నంకల్పం చెప్పుకుంటూ వుంటాం. **ఓం తత్ సత్ అద్య బ్రహ్మణః, ద్వితీయే ప్రహారే, ఉత్తరార్థే, శ్వేతవరాహ కల్పే, సప్తమే వైవస్వత మన్వంతరే, అష్టావింశతి తమే చతుర్యుగే, కలియుగే, కలిప్రథమ చరణే-** అంటూ సంవత్సరం పేరు, తిథి వార నక్షత్రాలు చెప్పుకుంటాం. అంటే- ఈ సృష్టిలో రెండవ ప్రహరము (ఝాము) యొక్క ఉత్తరార్థంలో, 7వ మన్వం తరంలో, 28వ చతుర్యుగంలో, కలియుగం యొక్క మొదటి పాదంలో, వికృతి నామ సం॥ర చైత్ర శుద్ధ పాడ్యమి దినమున ఈ శుభకార్యం చేస్తున్నాని భావం. దీనిని అంకెలలోకి మారిస్తే 197 కోట్ల, 29 లక్షల, 49 వేల, 111 సంవత్సరాలవుతుంది.

ఆర్యులు మధ్య ఆసియానుండి భారతదేశానికి వచ్చారనీ, ఇక్కడ ఉండే ఆటవికులను (ద్రవిడులను) దక్షిణ భారతావనికి తరిమివేసి ఉత్తరదేశానంతా ఆక్రమించారని చెప్పే చరిత్ర పూర్తిగా కల్పితం. ఆది మానవ సృష్టి త్రివిష్టప పీఠభూమిపై (నేటి టిబెట్ ప్రాంతంలో) జరిగింది. కొంతకాలం తరువాత వారు గంగా సింధు మైదానానికి వచ్చి నివాసానికి అనుకూలంగా ఉంటుందని అక్కడ స్థిరపడ్డారు. అప్పటికి ఇక్కడ మానవులే లేకుండిరి. టిబెట్ మహా భారతకాల్ వరకు భారతదేశాంతర్గతమే. మహర్షి దయానం దుని ప్రేరణతో కొందరు విద్వాంసులు రామా యణ భారతాది చరిత్ర గ్రంథాలను శోధించి ప్రాచీన భారతం యొక్క సరిహద్దులు ఈ విధంగా నిర్ణయించారు-

టిబెట్ నుండి శ్రీలంక సుమిత్రా జావా మొదలగు వాని వరకు మరియు కశ్యప సముద్రం నుండి పెకింగ్ వరకు భారతదేశమే. ప్రస్తుత ఆఫ్ఘనిస్తాన్, పర్షియా, బర్మా, మలయా, ఇండోచైనా మొదలైనవన్నీ విశాల భారత లోనివే నని అనేక ప్రమాణాలతో వారు నిరూపించారు. అట్టి విశాల భారతాన్ని కేంద్రంగా చేసుకొని భారతీయ ఆర్య సామ్రాట్టు లెందరెందరో ప్రవంచ దేశాలన్నిటిని ఏకచ్ఛత్రాధిపత్యంగా పాలించారు. అందలి ముఖ్యలైన కొందరిని మైత్రాయణ్యుపని షత్తు ఈవిధంగా పేర్కొంటుంది. రఘువంశరాజులలో ఒకడైన బృహద్ర థుడనే పేరుగల ఒక చక్రవర్తికి శరీరం యొక్క అనిత్య త్వాన్ని చూసి వైరాగ్యం కలిగింది. వెంటనే తన పెద్ద కుమారునికి రాజ్యభార మప్పగించి వానప్రస్థియై అడవులకు వెళ్ళి కఠోరమైన తపస్సు చేశాడు. అతని ఉగ్ర తపస్సును గాంచిన 'శాకా యన్య' ముట నంతసించి ఏదైనా ఒక వరం కోరుకో'' మన్నాడు. కాని, రాజు విన లేదు. "లోకంలో వస్తువులన్నీ అనిత్యమైనవేననీ ఆత్మ ఒక్కటే నిత్యమైన" దనీ నేను చక్కగా గ్రహించాను ఎంద రెందరో సామ్రాట్టులు, వీరాధివీరులు గతించటంజరిగింది కదా' అంటూ- ....

नागरिकता सांप्रदायिक मामला ही है!

यह कहना जोखिम भरा है पर अगर नहीं कहा गया तो वह हकीकत से मुंह छिपाने जैसा होगा कि नागरिकता कानून के विरोध या समर्थन का मुद्दा बुनियादी रूप से हिंदू बनाम मुस्लिम का मुद्दा है। यह एक सांप्रदायिक मसला है और अंततः इसके विरोध या समर्थन में हो रहा आंदोलन भी सांप्रदायिक ही है। बिल्ली को आते देख कबूतर की तरह आंख बंद कर लेने से यह हकीकत नहीं बदल जाने वाली है। जो लोग सचमुच यह मान रहे हैं कि नागरिकता कानून के विरोध में चल रहा आंदोलन संविधान बचाने की लड़ाई है और यह एक स्वंयस्फूर्त आंदोलन है वे मूर्खों के स्वर्ग में रहते हैं।

उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह बात मान लेनी चाहिए कि इस आंदोलन में शामिल लोगों को उनके पहनावे से पहचानें। उनकी बात मानने में कोई हर्ज इसलिए नहीं है क्योंकि देश में जो कुछ भी इस समय हो रहा है उसकी ग्रैंड डिजाइन तैयार करने वाले विश्वकर्मा प्रधानमंत्री मोदी और उनके गृह मंत्री अमित शाह ही हैं। नागरिकता कानून पास करना, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर का फहर्मेट बदलना और देश भर में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर बनाने का ऐलान करना उनकी ग्रैंड डिजाइन का हिस्सा है। इसलिए वे जानते हैं कि वे ऐसा करेंगे तो इस पर कैसी प्रतिक्रिया होगी, कौन लोग इसके विरोध में शामिल होंगे और कैसे तमाम विरोध प्रदर्शन अंततः उनके राजनीतिक लाभ का कारण बनेंगे।

तभी उन्होंने कहा कि इस आंदोलन में शामिल लोगों को उनके पहनावे से पहचानें। वे जानते थे कि इस कानून का सबसे ज्यादा विरोध कहां होना है और किसके द्वारा किया जाना है। कहने को कहा जा सकता है कि असम और पूर्वोत्तर में विरोध करने वाले लोगों के बारे में प्रधानमंत्री गलत हैं। पर वे गलत नहीं हैं। उनको पता है कि असम में विरोध करने वाले लोग दूसरे हैं और देश के बाकी हिस्सों में विरोध कर रही जमात अलग है। पर उन्होंने असम को इससे अलग इसलिए रखा क्योंकि उनको पता है कि मेनलैंड इंडिया का यानी भारत की मुख्य भूमि का पूर्वोत्तर से कभी मतलब नहीं रहा है। भारत की मुख्य भूमि के लोग पूर्वोत्तर के लोगों के साथ कैसा बरताव करते हैं यह कुछ दिन पहले राजधानी दिल्ली में देखने को मिला था। इसलिए असम और पूर्वोत्तर के विवाद को अपवाद मानें। उसके राजनीतिक असर का आकलन जिस पैमाने पर होगा उस पैमाने पर ही पश्चिम बंगाल का या देश के दूसरे हिस्से के आंदोलन का आकलन नहीं किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ने प्रदर्शनकारियों को पहनावे से पहचानने वाली जो बात कही उसके विरोध में ऐसे लोगों के नाम गिनाए जा रहे हैं, जो पहनावे के लिहाज से नरेंद्र मोदी और अमित शाह जैसे ही दिखते हैं। इनमें थोड़े से फिल्मी सितारे हैं, जैसे- अनुराग कश्यप, अनुभव सिन्हा, स्वरा भास्कर, महेश भट्ट आदि। कुछ सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जैसे हर्ष मंदर, अरूंधति रहय, योगेंद्र यादव आदि। इनके अलावा भाजपा विरोधी पार्टियों के कुछ नेता भी हैं। पर ये कौन सा नया काम कर रहे हैं। पिछले पांच-छह साल में देश में हुआ कोई भी विरोध प्रदर्शन उठा कर देखें तो उसमें ये सारे लोग एक पक्ष थे। विरोध का सार्वजनिक पक्ष हमेशा इन्हीं से तो बनता है। क्या दिल पर हाथ रख कर कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से कह सकता है कि यह आंदोलन वैसा ही है, जैसा २०११-१२ में अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन था? उस आंदोलन की तस्वीरें निकाल कर देखें और उसकी तुलना अभी हो रहे आंदोलन से करें, फर्क अपने आप पता चल जाएगा।

नरेंद्र मोदी और अमित शाह को इसका अंदाजा होगा कि जब वे नागरिकता के मसले को छेड़ेंगे तो उस पर कैसी प्रतिक्रिया होगी और किधर से कैसा विरोध होगा। उनको यह भी अंदाजा रहा होगा कि विरोध का दायरा और तीव्रता कितनी होगी। हो सकता है कि इसके दायरे और तीव्रता का अंदाजा लगाने में उनसे थोड़ी बहुत गलती हुई हो पर बाकी सारी चीजें उनकी तय डिजाइन के हिसाब से ही हो रही हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की बेचैनी से ऐसा लग रहा है कि उनका तीर बिल्कुल सही जगह पर जाकर लगा है। वे इस मुद्दे के सहारे देश में बिल्कुल जमीनी स्तर पर ध्रुवीकरण कराने में कामयाब रहे हैं।राहुल गांधी बार बार कह रहे हैं कि इस सरकार का काम लोगों को आपस में लड़ाने का है। वे बिल्कुल सही कह रहे हैं। बाकी सारे मोर्चों पर विफल रही सरकार इस मकसद में कामयाब हो गई है। देश के लोगों के आपस में लड़ने की जमीन तैयार हो गई है।

क्या नहीं? तो जरा बताएं क्या किसी को इस बात में संदेह है कि अनुच्छेद ३७०, समान नागरिक संहिता और अयोध्या में राम मंदिर का मुद्दा हिंदू-मुस्लिम का मुद्दा है? जब इन तीन मुद्दों को सांप्रदायिक मानने में संदेह नहीं रहा है तो नागरिकता मुद्दे को भी सांप्रदायिक मानने में कोई संदेह या संकोच नहीं होना चाहिए। असल में इन तीन मुद्दों के बाद से ही भाजपा और दूसरे हिंदुवादी संगठनों को एक नए मुद्दे की तलाश थी। वह

तलाश नागरिकता मसले पर पूरी हुई है। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले तीन मुद्दे दशकों तक लोगों के दिलदिमाग में पकने के बाद राजनीति के काम आए थे, जबकि नागरिकता मामले में ऐसा नहीं हो सका। यह अचानक आ गया।

फिर भी भाजपा और दूसरे हिंदुवादी संगठन इस मुद्दे को उभारने के पीछे का मकसद पूरा करने में लग गए हैं। पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना में हो रहे आंदोलन अंततः भाजपा का मकसद पूरा कर रहे हैं। अब यह सवाल पूछा जा सकता है कि भाजपा का मकसद पूरा होगा क्या इसलिए एक असंवैधानिक कानून को स्वीकार कर लिया जाए? नहीं कतई नहीं! पर इसका विरोध करते करते भाजपा के हाथों खेलना भी कोई समझदारी नहीं है।

इस मामले में आदर्श राजनीति अरविंद केजरीवाल कर रहे हैं। उन्होंने नागरिकता कानून का विरोध किया है पर इसके खिलाफ आंदोलन नहीं किया है। वे हर प्रयास कर रहे हैं कि दिल्ली के चुनाव में नागरिकता कानून का मुद्दा न बने। वे हर प्रयास कर रहे हैं कि दिल्ली का चुनाव उनकी सरकार के कामकाज पर हो। यहीं काम झारखंड में हेमंत सोरेन की कमान में विपक्ष ने किया था। विपक्ष ने वहां नागरिकता और तमाम दूसरे भावनात्मक मुद्दों को छोड़ कर भाजपा सरकार के पांच साल के कामकाज को मुद्दा बनाया था। सो, जो काम झारखंड में विपक्ष ने किया या जो काम दिल्ली में अरविंद केजरीवाल कर रहे हैं वह सही है। भाजपा के ट्रैप में फंस कर उसके एजेंडे पर राजनीति करने की बजाय अपने एजेंडे पर राजनीति करके उसे हराने का प्रयास होना चाहिए। क्योंकि अंततः चुनावी हार ही भाजपा को इस तरह के विभाजनकारी एजेंडे छोड़ने के लिए मजबूर करेगी।

Ajeet Dwivedi

ARYA SAMAJ ESTABLISHED : 1875 Founder: Maharshi Swamy Dayananda Saraswati

Read "Satyartha Prakash" for True Knowledge

ARYA SAMAJ 145TH ANIVERSARY DAY

March 25-03-2020

5-00 a.m. to 5-00 p.m.

All are Welcome

ARYA SAMAJ NEW BOWENPALLY

Branch Since : 1939 Branch Founder :

Late B.K. NARASIMHA.

H.No. 1-10-421, Peddathokatta, New Bowenpally, Secunderabad - 500011 (T.S.)

Enquiry Cell : 9652669732

Affiliated to :

"Arya Prathinidhi Sabha, A.P. -Telanganga, Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

Regd. No. 6-52 Fasli-1342/84

Cordially invited

to perform Yagna and Yoga

Secretary :

BRUHASPATHI GURUJI

Arya Samaj New Bowenpally

Secunderabad

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-01-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

ఆర్య సమాజజ్ మేడిబావి, వ్యాస్‌నగర్‌లో ఏర్పాటు చేసిన సభలో

గాయత్రీ ఆశ్రమ ట్రస్ట్ సంస్థాపకులు

డా॥ కోడూరి సుబ్బారావు గారికి ఘనమైన సన్మానం

పుస్తక అవిష్కరణ మరియు సన్మాన సభలో ముఖ్య అతిథిగా హాజరైన ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ ప్రధాన కార్యదర్శి శ్రీ విఠల్ రావు గారు, సభా ఉపాధ్యక్షులు శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు, డా॥ వసుధా శాస్త్రి, శ్రీ అరవింద్ శాస్త్రి గారు, పిడిచెడ్ గురుకుల ఆచార్యులు శ్రీ ఉదయనాచార్య గారు, ఆర్.పి. రోడ్, సికింద్రబాద్ అధ్యక్షులు శ్రీ మాశెట్టి శ్రీనివాస్ గారు, శ్రీమతి కురుపాటి కళ్యాణి గారు, శ్రీ బాసెట్టి సత్తయ్య గారు, శ్రీ కె.పి. నర్సింగరావు గారు మరియు సన్మాన గ్రహిత డా॥ కోడూరి సుబ్బా రావు గారు మరియు హాజరైన జనము

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.

Editor : • E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

संपादक : मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.